अपने सरकार.

CAVERNMENT OF INDIA

(CICHET पृश्यकालय, कलकता ।

NATIONAL LIBRARY, CALCUTYA

वर्ष संख्या 80 JC

(Class No. 8 2 8

Book No. 8 2 8

MGIPC-810-09/14/2/14 LNL (PB)-25-5-30-150,000 %



8. Je. 82.3.

THE VERY LEARNED VISWONATH TURKALUNCAR

TRANSLATIO INTO BENGALES

KASHEE NATH TURKOPUNCHANUN.

শহবিগোত্মক্ত

महामार्शाधाम, नीविचनार्थं ठकानकावकुछ उनोस

ভাষাপরিক্ষেশঃ ৷ ীকাশীনাথ ত লিজানন্ত ভদীয়াথ সাধুভাষ। লগাছ।

रेकांडा विमन मुस्याद मृद्धि परेन ।





প্রাপরফের্বরো জয়তি

गङ्गि (गाजमक्ज नाम्ना

শূরিক নাথ তুকার্করার ক্ত তদায় ভাষাপরিছে। আরিয়াদ্য গামনিবাসি শীকাশীনাথ তর্কপঞ্চানন কত, প্রাক্ত,

দেশ পুচলিত স্থাভাষা রচিত, নিভার মূক্তাবদী সম্মত, জ্পীরার নারস গুহু।

গুছনাম পদার্থ কৌমূদী ১. .

ক্ষিকাতা নগরে মিদন গুদাযতে বাজালা দুন ১২২৭ শালের. দৈর মাদে ২ তারিকে মৃদ্ভিত্ত ল।

নেত্র শোক পাদ পানি, বিনা দেখে প্রেশ্বানী, চলে ধরে করে

পূ<u>র্কাম।</u> সৃষ্টি রিতি লয় হেতু, বংসার সাগার সেতৃ, সেই বুলা ভাবি অবিশাম॥ বিষম বিষয় আশে, বল হয়া মায়াগালৈ,

ভাৱি প্ৰকারে হয়া অহা হারা হয়া প্রমাথ, অন্থ জানিয়া রাখ, মাহাতে না আলে ক্যা গছ য়া সদ্ভৱ দংখাগুলে লক মুখ্ লুক

যাহাতে না আছে পুথ গছ।। পুদুত্তর দুঃধাণবে, পুত্র মুগ্ধ পর্ব জীবে, নিম্প দেখিয়া নির্ভর। জীবে করিবারে জাণ, কাতর হইয়া প্রান, করি অতি করণা সাগর।। মহুর্জি-বৌতম মুনি, প্রমার্থ

তক্তরানী, মৃক্তির উপায় উপদেশ। করিলেন সর্বনে, যোড়শ পদার্থ জাতে, মৃক্তি হয় হয় দৃত্য শেষ।।

পুমাণ, পুমেয়, সংশয়, পুয়োজন, দ্ভীার, স্ভালা, হবয়ব, তর্ক পুরু বাদ, জল্ল, বিভ্ঞা, হেল্লাস, চল, জাতি, নিগত, সানানাং,

নিবঁর, বাদ, জল্ল বিত্ঞা, হেলাভাস, ছল, জাতি, নিগুছ, স্থানানাণ, তহুজানামিঃশেরসাং ধিগম ইতি গোডিম স্ত্রে৽ ॥

পুনাণ পুনের গণ, বাদ জল্ল পুরোজন, দ্কীত দিছাত তর্ক ছল 1 বিতথা জাতি সংশব, অবয়ব বিনিশ্য, তেখাভাস নিগ্-তের ফুল 11 গোতম কবিত দেই, বোড়শ পদার্থ এই, কহিলাম

করিবা অরণ ৷ নুর্গার ভাষা পরিচ্ছেদে, দুর্ব্যাদি পদার্থ ছেদে, তার

জান হয় একার বা পরমার হাতে ভাবি, কছে কাশীনাথ কবি, উপ-নাম তক্ত পঞ্চীনন ৷ ভাষা পরিচ্ছেৰ বিহু, উদ্ধারে পর্মণন, কর छाता क्र छड शना। मृद्धि कति भूदाभन, मृन्द्रार्थ धनम् , क्राद সন্দেহ হয় যদি। ভাবিলে ভাবনা যাবে, অমকারে আনোঁ হবে, मिछ प्रांत लमार्च (क्रीमकी।। यन इस मायकान, कहिसा केलना মান, শ্রেধন করিবা শৃভ বৃদ্ধি। বিনয় বচন বৃথা, ক্পানু না করে काथा, म्यर्गत विवर्ग विमर्दि॥ পুমার ফেকর্ ভাঁহার রাম পুরাণ গৈনই পুমাণ চারি পুকার इय, भुड क, सन्धान, उभगान ও नहा । अहारन भूमा नाख मधीर्थ. व्यम्भव वाज्यव व्यवस्त्र कहरन व्यक्तितानि कहा मा। कहनानि পাবের অর্থ পাকার কহিব । এ স্থানে প্রেয় শাস্ত্রমার বিষয় তাবভার নহেপুকত্ত পুমেয় শব্দ, পারিভাষিক ও পত্তভাদি শব্দের ন্যায় ফোণারচ তথাচ মিধ্যা জান জন্য বাসনা স্বরণ-মানারের কারণ যে মিধ্যা জ্ঞান তাহার নাশক যে জাম তাহার যে বিষয় তাহার নাম প্রমেয়া সেই প্রেয়, হাদক প্রার হয়, আলা, नहीत, हिन्मुनं, वर्ष, वृष्कि, प्रनः श्वृति, एस्स, श्वि जिन, कन, मृन्धे, ও অপবর্গা বহিরিন্দ্র মাতের গাহ্য যে প্রিবী, জল, তেজঃ, ৰায়, ও আকাশ, এই পঞ্চুবেরে বিশেষ গ্ৰ তাহার নাম অর্থ (मह वर्ष, शक शकात हत, तक, तमन्द्रमें, ह्रमें उ भव। या शुन्-ভির জনক হয় তাহার নাম দোষ। সেই দোষ, তিন পুকার হয়, রাল, বের, ও মোহ ব জলানভর মরও, মরণানভর জন্ম, ইহার

নাম পেত ভাব। ধর্মাধর্ম পুরুতি জন্য যে অর্থ তাহার নাম ফল।
সেই ফল, দুই পুকার হয়, মুখ্য ও গৌণ। মুখ্যুকল, সুখ লৃংখের
উপভোগ, গৌণ ফল, পারীরাদি। লৃংখের গুড্যুত বিনাপের নাম
অপরর্গ। জংলার বিনাপ বিনা তাহা সম্ভব হয় দুল। অপবর্গেরই
নামান্তর মুক্তি। তত্ব তৃত্যুক্তাক্তির কথার নাম্বাদ। তিজিগীব্
ব্যক্তির ক্থার নাম জন্প। যাহাকে উদ্দেশ, করিয়া পুরুতি হয়

অথাত পুৰ্বির কারণ যে ইচ্ছা ভাছার বিষয়ের নাম পুরোজন ই বাদিপুতিবাদিল যে স্থানে সাধ্য সাধনের কিয়া সাধ্য সাধনা,ভাবের নিশ্য হয় পেই বান, দ্টান্ত হয় । সেই দ্টান্ত, দুই পুকার হয় অথ্য ও ব্যতিরেকা । পর্ত পক্ষ, বহি সাধ্য, ধুম হেত্, ইত্যাবি স্থান মহানসাদি, অথ্যা দ্টান্ত, যে হেত্ মহানসে বহি প্রের নিশ্য হয়: এবং জলজদাদি, ব্যতিরেকা দ্টান্ত, যে হেত্ সম্মান্ত বহি ধুগাভাবের নিশ্য হয় । পার্ত্রির যে নিশ্য তাহার নাম

স্থান সালি, অখন দ্টার, যে হেতু সহান্দে বহু বুন্দর
নিশ্য হয় এবং জনজদাদি, ব তিরেকী দ্টার, যে হেতু জনজদে
বহি ধুনাভাবের নিশ্য হব ! পারীর্থের যে নিশ্য তাহার নাম
সিভার। সেই সিভার, চারি পুকার হয়, সর্তক্র সিভার, পুতিতর
সিভার, অধিকরণ সিভার, ও অভ্পোগম সিভার। বাদী ও পুতিকাদী এই উভয়ের সমাত যে সিভার তাহার নাম সর্তক্র সিভার।
যেমন স্থায়ের জগৎ কত্র। বাদী ও পুতিবাধী ইহার একেরসুমাত
যে সিভার তাহার নাম পুতিতক্র সিভার। যেমর মীমালইকের-

দিলের শব্দে নিত্যন্ত । যে অর্থের সিদ্ধি বিনা যে অর্থের সিদ্ধি হয়

না তাহার নাম অধিকরণ সিজার। যেমন পৃথিবীর জন্তু সিজি
বিনা ইথারে তাহার কর্ত্ব সিজি হয় না। স্তে সাঞ্চাই অপাপ্ত
যে বিষয় তাহার ধীরারের জাপক যে বিশেষ ধর্ম কথন ভাহার
নাম অভ্যুপগম সিজার। যেমন মনের ই দিয়ার। তত্ব জান রহিত
অর্থাই অনিশিচত যে অর্থ ভাহাতে কারণের উপপাদন ঘারা তত্ব
নির্ণার্ধ যে আপত্তি তাহার নাম তর্ক। যেমন ধ্ন, যদি বহির ব্যভিন্
নারী হয় তবৈ বহি জন্য না হউক, এবং পর্ত যদি নির্হিত্ব হত তবে,
নির্দ্ধ হউক ইত্যাদি। ধুল, যদি বহির ব্যভিচারী হয় তবে বহিজন।

না হউক্ এই তাকেতে গুমে ৰহিন্ত ব্যক্তিচার শকার নিরাশ হয়,
শকাৎ ধুমেতে বহিন্ত ব্যাপ্তি জান ইম্পশ্চাৎ অনুমিতি হয়ক বকার
তাৎপথ্যের অবিষয়ীভূচ অর্থের কলুনার ছারা যে দোষাতিধাল
তাহার নাম হল। যেমৰ এই লোক নেপাল দেশহইতে আগত
যে কেত ন্বক্ষলবন্ত এই স্থানে ন্ব স্থায় এই অর্থের কলুনার

या १००० नवक्षणवस्र अह साम नव मृत्या अह आर्थत कहानात बाह्य हेहात नवमध्याक क्षण कार्या अह लाय क्या तह एन,

তিন পুৰার হয়, যাক্ছল, সামান্ত্রন ও উপচার হয় অবিলৈ-বে কথিত, যে অই ভাছাতে বকার অনভিপ্রেক্তর্বর্থের কর্মনার ষার। যে শোষাভিধান ভাছাত নাম বাক্ট্র । বুমন খেডাখগ্র-দান হেইতেছে এই অভিপুথ্যি খেত ধাবদান হইতেছে এই পুরেকি করিলে খেত গুৰুষাবমান হইতে পারে না এই দেখে क्थून । नामानाधिकतर्ते। कथिछ खार्खत खनल्हिपानल्हरम खर्ब কল্লনার ছারা যে ছোহাভিধান তাছার নাম সামান্ত্র । যেমন बीर बुख्यन विष्नुत्राहरून नम्रम अरे कथा करिएन वरे वेहिंक बुद्धिन भारत विष्ठाहरू नम्हि गाधन कदिए उद्दान अहे कञ्चनात मात्रा ৰ্জিন মাজে বিদ্যালয়ণ সমতি সাধন ক্রা যায়না হে ছেডু ব্রাভঃ ৰ্যক্ত্ৰিত বঙ্ভিচার হয় এই দোষ কথন। এক বৃত্তির, দার। শব্দ পুরোর করিলে অপর বৃত্তির দরি। যে পুতিষেধ তাছার নাম উপ-চার ছল। যেমন অমাৎ শুমৈর,শক্তির ঘারা আমি নিশ্য ই मुस भुरगात कतिरम धार शुक्ष कामूक हहेरठ, छेरशम अछयव कि करन निका देश और शुजिरमध अवन नीन शामत्र नक्सनात देशता बीन बाहे बाहे भार भुरहाश कहित्न बाहे कि हॉल बोल इस इस এই পুভিষেধ। পরমত থগুনের নমি বিভটা। জাতি, সংশয় আবয়ব, নিৰ্বয় ও ছেত্ৰ।ভাল-এই সকলের সঙ্কৰ ও উদাহারৰ পশ্চাৎ ব্যক্ত হুইবে । যাহাতে পরাক্ষম হয় তংহার নাম নিগ্রহ্যান সেই নিগুহস্থানপুতিজ্ঞানি, পুতিজ্ঞান্তর, পুতিজ্ঞানিরোঞ্চ হেতৃত্তর, অর্থান্তর, নির্থাক, প্নকৃতি, ও অর্কভাবণ ইত্যাদি নানা প্রারু र्य !

ि । निर्घ**ें**,

पुरुक्ता	শয় -	পাঠ্ব	नुस्क्र-।	4 4.	শ ্ভি
नपार्धात कै था।	,	30	অশুমিতির লক্ষৰ	91	4.
মুব্যের বিভাগ	2	74	ওপ্ৰিডিয় লম্ব	32	u
হবের বিভাগ	١.	38	भौरदर सम्ब	01	¥.
मुरराह लक्ष्य	1	. >>	শত্যমের বিভাগ	6	. 4
কার্মর বিভান	•	R.	भुवारकत्र कत्रव	**	36
बर ५ व लक्ष	.:	•	লৌকিক পুডাকের আপার	**	W
লামান্যের বিভাগ		>>	क्लोकिक नुस्राह्म यीना	44 3	•
•म बारना <u>ड</u> ल ड न	•	. 1	নামান্য লক্ষ্যা	8>	35
िल्लंब नेपार्श्यंत्र निक्नंब	•	٠ ١	জাৰ লম্ভৰা	6	3
नमवीय अमार्थ्य नहिन्म	••	ั้ง	cuts वि	د ١.	•
नगराय नदारर्थक लक्ष्य	•	٤.			
जिंद निर्मार्धित सक्त 3 विज	1st P	•	नद्रायार्जर सञ्च	Łs	50
मडणाक्यां मार्थ्य क्यन	۲	18	ব্যাধির লছৰ	<8	10
Trigg ME-	>	1,8	অনুমিভিত্ত করৰ ও ব্যাপার	, 21 .	26
কারবেরু বিভাগ	"	> 0	শব্দেষ্ট্র লক্ষ্	×	•
অন্যথানিখির বিভাগে,	75	Ł١	व्यानद्वकं लक्ष्य	کار	۲
পুন: সংকর্ম্য ক্রম্প	**	>•	অসংশ্বস্ত সমন	38	•
रेटवर्ग्य कथन	>4	51	व्यारिनात्र लक्षन	44	35
मृद्यदिल्लावत् सनदिल्लंब कथ	175	20	পদ্ধতার বিষপন	86	1.
পৃথিবীর নিৰূপন	١.	,	न्त्रां एवं व्यक्त	33	**
জনের নিকশৰ	A	••>1	ছেম্বাভানের বিষ্ণার	34	•
তেত্ত্বের নিকপৰ	২৬	75			
বায়ুর নিকপন	34	•	গ্ৰশমিতির করেও ও আপার	9.	35
আকালের ব্রিষপর	X X	•			
কালের নিবশব	9	*	श्रीद्वार्यत्र क्यून अ यात्रित		"
मिरक्य निक्ने	9)	>•	व्यक्ति सक्त	35	11
আখাৰু নিৰপৰ	૭૨	۶•	नंकि खात्मह काहव	15	53
বুৰির বিভাগ	91	34	व्योतिकामिशामक विवर्धा	96	•
भूगात्वव मध्य	91	*	লক্ষণায় লক্ষণ	91	>•
नुराहरू मक्न	91	>~ !	याष्ट्रमात्र संबद	* •	•

नुष्य-	74	नाष्ट्र	नुकार	শর	শ্যুত
setim(2	25	36	यादियांगर मुहर	339	>8
हें ब ीशाका	-	50	14	234	10
wisie	-		ধুণাবির মঞ্চৰ	27	23
W-25		•	বৈশেষিক মধ্যে শুকান	383	13
-			र्चनित्रक रावित्र मक्त	38.0	Ł.
ACT PARTS	11	,36	অুগ্ৰাণতিয় বিকাৰ	36	12
Bertettille (Ames	**	50	न्त्रित्र निक्नव	410	V
बिराना सन	33		বুন্ধেয়ণ বিজ্ঞান	416	Š.
मामाग्र स्व	33	76	हेंद्राह निकार	110	•
क्रकानावृद्धित सक्य	>6	10	रबीयह निकाब	15	31
बालक हैं है लक्ष्य	>>	•	यरकड़ निक्यन	300	1
कल्छ विकास	>50	38	नुवृत्तित करित	>0.	•
इरमा निकृतन	31	5.	বিৰ্তির কারণ	292	
ब्राप्कत विकास	31	*	जीवन त्यानि बरपुत्र निक	14 202	>>
श्राचंत्र मिन्नाने	2	>-	6करवड़ निकर्न	306	
क्षा वाहि निकार	300	\$	मुरायम निकाब	305	2.0
পরিবার্নের বিষণৰ	100	•	त्र्वरहरू निक्नव	108	1.
नुंबरकूत्र निकलन	300	38	मन्त्रासक तिन्द्रन	108	¥.
म-स्वाताह निकान	3 43	. 36	क्रांतर व नुवाविकार्तर		
Colena Cols	3.5		স্করৰ ও ন্যাপার	105	· 1
नहरू क क्लाहरपड़ विकास	34		सहरतह सकत	100	
mice feets	>>-	1	नुकाविकारमह ८.४न	106	
च्युवांत्र मचन	>>-	10	अरवायरका मामन	305	>1
िन्त्रम सक्त	233		वाब्राक्षेत्र विकास	>01	. 11
का-नरहरू सक्क	22%	33	वैरस्त्र मुक्ता	101	્યા
विनाधीरमा अन्त	222	370	व्याप्त नुवान	700	4
चलार मृत्यु	3.3	T	व्यवस्थात निकार	202	14
metalität mas	356	Š	अवस्थित पुषान	54.	. 1
STANCES WIFE	220	30.	अर्थाक्ष अञ्चन	787	
सनुता ७ नुत्राह स्रोहर	>>4	. 50	दर्शाहबनात्वह काहन	383	4
PAIR CHA	376	•	नीद्र विकासादि	340	>>

ন্যায় দর্শন। ভাষা পরিছেদ।

মুমুক্লোকেরদিণের পরিমমোক্ষের কারণ পরমান্থার তত্ত্তার তাহার কারণ পরমান্থার মনন শেই মনন শদার্থ পরমান্থাতে তদিকর তাবৎ পদার্থের তেদের অনুমান সেই অনুমান তাদুশ তেদের পূর্বিয়োগা যে তাক পদার্থ দ্বাহার জীন ব্যতিরেকে হর না যে হেন্ড অভাবের জানে পুড়িযোগির জান কারণ অভনব পদার্থ নিরপণ আবশ্যক এই হেন্ড পুথমত: নৈয়ায়িক ও বৈশেষি-কির্দিণোর বিচারসম্মত তাবৎ পদার্থ সামান্যরূপে দর্শন্ত কুরাই-তেছেন।

> त्रयं गुजा कांचा कर्म साम्यत्य सिवृधेवतः। समवाय खाचाऽभावः पदार्थाः सप्त कोर्तिताः।

দুব্য • গুণা স্তথা কর্ম সামান্য • সবিশেষক • । সমবায় স্তথাহভার: পদার্থাঃ সপ্ত কীর্ত্তিতাঃ।

দুব্য ওপকর্ম দামান্য বিশেষ দমবায় ও অভাদ এই দাত পুকার পদার্থ সামান্যরপে কহিয়াছেন তাহার মধের কোন পদার্থ কভ পুকার হঁয় তাহা পশ্চাৎ কহিবেন। এবং দর্শেষে অভাব পদার্থের কর্বের ঘারা জগতে দামান্তঃ ভাব ও অভাব এই দুই পুকার পদার্থ তাহার মধ্যে দুব্যানি হয় ভাব পদার্থ হয় অভাব পদার্থ কত পুকার ভাহা ফেন্নে ব্যক্ত হইবে এইরপ অর্থও সুব্যক্ত ক্রিয়াছেন। নমুতি নপ্ত পদার্থের মধ্যে কোন' পদার্থ কত পুকার হয় ত,হা জ্ঞান কহিতেক্লেন !

> चित्रवश्यतेत्रीत्मबृद्धीम कालदिगृद्धिनीमनः १ त्रैयाखश्य मुखास्यं रसीमन्धस्तवः परं। सर्थः संव्या परिमितिः एयक्ष ततः परं। संग्रीमस्य विभागस्य परत्तवः । वृद्धिः सृद्धं दुःखबिका विश्वायत्रे मुक्तवः। त्रव्यत्वेषस्यकारावश्रद्धं सन्दे एवव।

ক্ষিত্যহপ্তেজে। মঁক্ষ্যোম কালদিংখিছিনোমনঃ।
দুব্যাণ্যহথ ভণাকৃপ- রসোগদ্ধন্ততঃ পর্:।
সার্থা সংখ্যা পরিমিতিঃ প্থক্ত্প ততঃপর-।
সংযোগদ্ধ বিভাগদ্ধ পরস্বধাহপরস্ক-।
বুদ্ধিঃ সুথ- দুঃখিমিছা ছেধোংগ্রো ভকত্বকদুবস্ব- সেহ্দ-সারাবহদ্ধ- শাব্ব এক-।

পৃথিবী জল তেজঃ বায়ু আকাশ কাল দিক্ আয়া ও মনঃ এই
নয় পুকার দুব্র পদার্থ । এব॰ রপ রল রাজ রুর্ল লংখ্যা পরিমাণ
পৃথক্ত লংযোগ বিভাগ পরত্ব অপরস্থ বৃদ্ধি সুথ দুংথ ইচ্ছা ছেঁয
যদ্ধকৃত দুবত পুষ্ত কাজার ধর্ম অধ্যা ও পাল এই চত্রিপতি
পুকার গুণপদার্থ ! যে বস্তু সমবায় ও পুগতাব এই অন্যতর
লয়তে গুণের আশুয় হয় তাহার নাম দুব্য ! জলীয় পরমাণ্তে
পুগতাবিসহতে গুণের অভাব পুঞ্জ ত হাতে অব্যাপ্তিবারণার্থ সমবায় সম্বন্ধ কর্মন ! উৎপত্তিকালীন দুব্যে সমবায়নম্বন্ধ গুণের
আতাবুপুফুল তাহাতে অব্যাপ্তিবারণার্থপুগিতাবস্থ্য করন ! সক্ষবায় দোর তিন পুনার হয় অব্যাপ্তি অভিব্যাপ্তি ও অসম্ভব ! লক্ষে

লক্ষণের অধানন অব্যাপ্তি? অলক্ষ্যে লক্ষণের গানন অভিব্যাপ্তিই লক্ষ্যালক্ষ্যে লক্ষ্যের অগানন অলক্ষ্য । যাহার লক্ষ্য করাযার ভাহার নাম,লক্ষ্য তদ্ভিন্ন অলক্ষ্য । ওথের লক্ষ্য বৃষ্ট কার করিবেন। প্রত্যক্ষ দুব্যে প্রত্যক্ষ পুনান অপুত্যক্ষ দুব্যে অনুমান প্রদান এবং প্রত্যক্ষ গুলে প্রত্যক্ষপুমাণ অপুত্যক্ষগুলে অনুমান প্রদান । অপরপুরুশকতেজঃ লামান্যাভাবের নাম অপ্রকার এবং ক্রিয়া লামান্যাভাবের নাম আলক্ষ্য অভ্যাবর অভ্যাবর ও আলক্ষ্য গুলান্তর নহে কিন্তু অভ্যাবপুনার্থেরই অন্তর্গত্ত । এই রপে কোন্পান্থি কোন্পনার্থের অন্তর্গত হ'য় তাহা বিবেচনা করিবা। নব দুব্যের ও চুত্রিভিশতি গুলের লক্ষণানি পশ্যাৎ কহিবেন।

কমৈর বিভাগ করিভেছেন 1

उत्तीपर्यं तता अवतीपर्यमानुष्यन्तर्या । प्रसारस्य गमनं नकीर्येतानि पष्य ॥ धमसं रेषनं सान्द्रनीर्कं ज्वनन मैंवच । तिर्यमानमाऽप्यक्षत्र गमनादेव ग्रद्यते ॥

উৎক্ষেপণ ততে। হবক্ষেপণমাকৃঞ্চনম্বথা। পুসারণঞ্চ গমন কর্মাণ্যেতানি পঞ্চ॥

जुनाः (तहने मान्याः क्यात्। जान मान्यः) जुनाः (तहने मान्यः नार्ष्ववन स्मवह।

তিযারীমনমাইপ্রহত গমনাদেব গৃহ্যতে॥

উৎক্ষোণ অবক্ষেপ্ৰী আ চ্ঞান পুদারেণী ও গমন এই পঞ্চ পুকার কর্মা। উড়ে ক্ষেপ করা নীটে ক্ষেপ করা সক্তিত করা বিস্তারিত করা ও চরণের নিক্ষেপাণি এই সকল অর্থ যথা জামে উৎক্ষেপ্র-গাণি শরের জানিমা। এবং ভূমণি রেচন সংক্ষন উঠুজ্বান ও তির্যা গ্রমন এই ক্ষিচ পুকার কর্ম গমনের অন্তর্গত হয়। সংক্ষন শরে রথের গতি উদ্ভাবন শরে তেজের গতি তির্যাগ্রমন শরে বজা গতি ! বেপ বিশিষ্ট দুবে সমবায় সম্বন্ধে বর্তমান বে পদার্থ বিশেষ কিয়া পঞ্চন ক্ষণ বৃত্তি গৃশাসর প্রতিযোগী যে পদার্থ তা হার নাম কর্মা ! প্রথমতঃ অভিযাত কিয়া নোদন হেবছ কর্ম ক্ষেপ্র পশ্চাৎ বিভাগ পশ্চাৎ পূর্ব সংযোগ নাশ পশ্চাৎ উত্তর সংযোগ পশ্চাৎ ক্র্যনাশ হয় ক্লতেখব কর্মা পঞ্চম ক্ষণ বৃত্তি ধ্বংসের পুতি-যোগি হয় পুত্রক কর্মে পুত্রক পুনাণ অপুত্রক কর্মে অনুমান পুমাণ !

বামানে রেণবিভাগ করিভেছেন !

साजानं, विविधं प्रोत्तं प्ररुवात्यरम्बनः । अथादि चिक्टाज्ञका सन्त्यरत्याचाते॥ प्रस्मित्रांच् या जातिः सैवात्यरत्योच्यते । ज्यकादिक जातिका प्ररात्यरत्योच्यते ॥ चायकतात् प्रातिकाद्याद्याद्याद्याप्यन् ।

লামান্য দিবিধ প্রাক্ত পরকান্পর্মেবচ।
দুব্যাদি ত্রিকবৃত্তিস্থু সত্তাপর ক্রয়োচ্যতৈ।
পরতিদাচ যা জাতিঃ সৈবাহপরত্যোচ্যতে।

দুব্যহাদিক জাতিস্তু পরা২পরত্রয়ো**চ্য**ত।।

ব্যাপক্ষাৎ পরাহিপিন্যান্ত্যাপ্ত্রার্থপর্য হিলচ !

সামান্য পুই পুনার ইয় পর ও অপর ! দুব্য রুণ ও কমা এই
তিনে বর্ত্রমানা যে সভা সে পর সামান্য হয় যেহেড্ন কেবল
দুব্যাদিব্ভি যে দুব্যখাদি জাতি তাহা অপেক্ষা সভা ব্যাপিকা হয়
দুব্য সং গুণ গং কর্ম সং এই শকল পুতাতি সভা ভাতির পুমান
হয় ৷ পর সামান্য ভিনা রে প্রিধীত্দি ভাতি তাহার অপর
সামান্য হয় যেহেড্ন প্রিধীত্দি ভাতি সভা ও দুব্যক্ষিদ ভাতি

অপেকা ক্রাপ্যা হয়। বুব্যস্থারি রাতি পরসামান্য ও অপর ৰামানঃ হয় যেহেতু দুবুংভাৰি জাতি পুথিৰীভা**ৰি জাতি অংগঞা** ব্যালিকা এক সন্তাজাতি অপেক্ষা ব্যাপ্টা হয় ৷ যে অধিকহানে থাকে সৈত্যাপক ! যে অনুস্থানে থাকে সেত্যাপ্য ! নিড্য অথচ নমধার লছকে অনেক আপুরে বর্তমানু যে পদার্থ তীহার নাম সামান্য । সামান্যে নামান্তর জাতি। যুব্যহানি তিন কাতি হয় সামান।বাদি চারি উপাধি হয়। প্থিবীত্বাদি সকলেই কাতি কেবল আকাশত্ব কালত্ব 😮 দিলু এই চিন উপাধি i রপরাদি ও উৎক্ষেপণত্বাদি সকলেই আতি । দুরাত্বাদি সকল জাতি এ কছুণের লক্ষ্য হেছে দুব্যন্তাদি সকল জাতি হিত্রগঁ এবং সমবার সম্ভে অনেক আশুরে বর্তমান। হয় ৷ সামান জাদি উপাধি অলক্ষ্য যেছেৰ সামান্ত্ৰাদ উপাধি সমবায় সমুদ্ৰে ৰৰ্জদাৰ-হয় না ৷ যে পদাৰ্থ যে সমৃত্যু বৰ্জনান হয় ভাছা পৃশ্চাৎ কহিব। সমবায় সমূদে অনেক আপুয়ে বর্তমান যে জন্য সংযো-গাদি তাহাতে অতিবঁণন্তি বারণার্থ নিত্যুপদ। নিত্যু এবং সমবায় সম্বনু এক আঁপুরে বর্তমান যে আকাশের পরিমাণাদি ভাহাতে অভিব্যাপ্তি বারণার্থ অনেক পদ। নিত্য এবং অনেকআশুয়ে বিশেষণতা সম্বনে বস্তমান যে অত্যন্তাভাষাদি তাহাতে অতি-ব্যাপ্তি বারণার্থ সমবায় পদে। এক মাত্র বৃত্তি তদ্ঘটত্বাদি জাতি নহে অতএই ভাহাতে অহ্যাপ্তির আশস্কা করিবা না । এ স্থানে নিত্য শব্রে ধুণদের অশুক্রিযোগী কিয়া প্রাগন্তাবের অপুতিযোগী যেছেত অন্যতরের ঘারাই লংযোগাদির বারণ হয়। পুত্যক ৰাতিতে পুত্ৰক পুমাণ অপুত্ৰক ৰীতিতে অনুমান পুমাণ t

পরমাণু সকলের পরস্করভেত্তক বিশেষ পদার্থীর নিরপণ করিতেহেন।

सन्तीर निवानयहति विशेषः परिकारितः ॥

অস্ত্যে নিত্যদুব্যব্তি বিশেষঃ পরিকীর্ত্তি ত: ॥

অন্তঃ অথ্ট সমনায় সমুদ্ধে নিতঃদুবঃবৃত্তি যে পদার্থ তাহার নাম বিশেষ এ অন্তঃপদে মহাপুলয় পর্যান্ত স্থায়ী অর্থাৎনিত্য জন্য ভাবপদার্থ সকলের অন্ধিকরণ কালের নাম মহাপুলয়। হিত্যপদে ধুশ্ব ও পাগভাবের অপুতিযোগী অর্থাৎ উৎপত্তি বিনাপ রহিত ! জন্য পদৈ উৎপত্তি বিশিক্ট! প্রমাণ্ডে সমবায় সংদ্বে বর্তমান যে দ্যুৰুক তাহাতে অতিব্যাপ্তি বার্ণীর্থ অন্ত্যুপদ ৷ অভাবত্যাদতে অতিব্যাপ্তি ৰার্মার্থ নিত্যদূত্ত্ব্যব্তি এই ভাগা জন্য দুব্যব্তি তদ্ঘ-টিস্বাবিতেঅভিব্যুপ্তি বারণার্থনিত্যপদা নিভঃদ্ব**্বৃত্তিআকাশস্থা**ন দিনত অতিব্যান্তি বারনার্গুলমবায় সম্ভানু কুখন ! এরশ্যদ*ু*পি এই শক্ষণে আত্মন্ত জাতিতেও আকাশাদির পরিমাণাদিতে অতিব্যাপ্তি হয় তথাপি জাতি ভিন্নও নিতঃ গুণ ভিন্ন এই দুই দলের ছারা বারণ করিবা ৷ ঘট পটাদি তাবৰমূর অবয়বের ভেদে পরিবরি ভেদ্ জ্ঞান হয় অবয়র রিছিত পর্মাণ দকলের পরল্পর ভেদ্জানার্থ विरमें भनार्थात बीकात्। सह विरमें भनाब यानितीवरनत পুডাক পুমাণ সিদ্ধ হয় যদি যোগিরদিগের পরমাণু পুডাকে পুমাণ না থাকে তবে অপামাণিক হয়।

मत्रवाय श्रमार्थ मन्नी कता है छिट्टन !

घटादीनां कपालादी नथेषु गुरुकर्मसी।। तिशुंजातेस सम्बद्धः समवायः प्रकीर्तितः।।

ঘটানীনা কপালাদে দুব্যেষ্ঠ গুণকর্মণেঃ। তেষুজাতেশ্চ সম্বদ্ধ: গমবায় পুকীর্তিতঃ॥

ছাৰয়ৰেতে অব্যানির ওংকন্তে ওণের ক্রিয়াবতে ক্রিরার নিত্র দুবেন্ত বিশেষ প্রার্থের এবং দুব্য গুণ ও কর্ম এই,তিনেতে জাতির যেসম্বন্ধ সেই সমবায় । এ কেবল সমবায়ের পরিচয় মাত্র । নিত্য

অখচ বিংশহণতা সম্বন্ধ ভিন্ন যে বৃত্তি নিয়ামক এক সম্বন্ধ তাহার নাম সমবার এই ভাছার ক্রণ! সংযোগ সমুদ্ধ অভিব্যাপ্তি বারণার্থ নিত্যপদ ৷ বিশেষণতা সম্বন্ধে অভিব্যান্তি বারণার্থ হিশে-বণতা ভিন্ন এই ভাগ ৷ আকাশাদি বৃত্তি আকাশাদির তাদাক্যা অভিবৰ্গন্তি বাহুণাৰ্থ বৃত্তি মিয়ামক এই বিশেষণ ৷ ডাদাস্ব্যাসমূদ বৃত্তিনিয়ামক নহে ৷ পর্য়ারাসম্বন্ধে অভিবউল্প বারণার্থ এক পদা সংযোগ সম্বন্ধে ভূড়দানিতে ঘুটানি থাকে। বিশেষণতা তিন পুনার হয় কালিক বিশেষণতা দিক্তৃত বিশেষণতা ও দৈশিক বিশেষ-नजा । काटन कालिक टिल्मयनजा मस्टिक मकन जीत है। का मिटक দ্ক্কৃত বিশেষণতা সমূদ্ধে শীক্ষা বস্তু থাকে ৷ দৈশিক বিশেষণতঃ দুর পুরুর অভীবীয় বিশেষণতা ও ষরণ বিশেষণতা। অভারীয় বিশেষণতা সম্বন্ধে অভাব থাকে ৷ ৰব্নপ বিশেষণত্বা সম্বন্ধে গুণাণা-দি,তে গগণস্থাদি থাকে! তাদাস্থ্য সমূক্ত আপনি আপনাতে बारक। भरमदा मध्न घरेवामि इंडमीमिएड शास्त्र। अडे. कशास्म ष्ठ हे बाह्य अने परि पृष्ठ बाह्य अदः अने मुद्रा ६५ बाह्य देउामि পুতীতি সমবান্ত্র পুঁমাণ ৷ সমবায় দয়নু এক স্টলেও বায়তে রূপের অভাব পুমুক্ত ভাছাতেক্ষপথতা জান হয় না যে ছেত্ত বায়ুতে কেবল সমবায় থাকিলেও ইপীয় সমবায় নাই !

অভাব পদার্জে বিভাগ করিতেছেন।

क्रभावकु दिधा संसमेष्टियाण्याव सेदतः। प्रामभावे क्रष्टा धंसारप्यस्काभाव एवच। एवं प्रेविधा मापनः संसमेशभाव स्वते।

অভাবস্থু দিখা সংসর্গাহন্যান্যাহভাব ভেদতঃ। প্রাণভাবস্তথা ধৃংসাহপ্যহত্যন্তাভাব এবচ। এবং বৈবিধ্য মাপদঃ সংস্ণাভাব ইম্যতে।

ভাব পদার্থ ভিন্ন যে পদার্থ তাহার নাম অভাব দেই অভাব ৰুই পুকার সুংসর্গাভাব ও অনেগ্রন্যভাব। অনেগ্রন্যভাব ভিন্ন য়ে অন্তার দেই সংস্থাভাব দেই সংস্থাভাব তিন পুকার পুৰাভাৰ হ'ল ও অভ্যন্তভাৰ। পুভিযোগির জনা হইলৈ যে আছাবের নাশ হয় দেই পাগভাব। জন্য যে অভাব নৈই ধুণ্দ নিড্য যে সংসর্গাভাষ সেই অভ্যন্তাভাব I এই কপালে ঘট হইবে ইন্ত্যাদি পুতীত্তি প্রাগভাবের পুমাণ। এই কপালে ঘট নই হই-স্লাহে ইন্ত্যাদি পুতীতি ধৃৎদের পুমাণ। এই ভূতাল ঘট নাই ইভাবি পুঁতীতি অভ্যন্তাভীবের পুমাণ। তাদারাঃ সম্বাবহিন্ন পুভিযোগিতকি অভাবের নাম অনেগ্রনগভাব। ঘট পট-श्रीक किस अव घर भरे नहर देखानि भुजीकि खटराना:-ভাবের পুমাণঃ পাচীন মতে ঘটাদির অভ্যন্তাভাবের পুভিযোগী ভিন পুরুরে ঘটাদি ঘটাদির ধুণ্দ ও ঘটাদির প্রাগভাব। ঘটের অভ্যস্থাভাবের জানের পুতি যেঁমন ঘট জান পুতিবনুক হয় তেমন ঘট ধ্বঃস ওপ্রাট পুাগভাবও হন্দ। যদ্যপি যে অভাব যে অধিকরণে খাকে নে অভার নেই অধিকরণের স্বরণ হয়,এই রূপ কলুবাতে লাঘৰ পুযুক্ত অভিৱিক্ত অভাব পদার্থের ৰীকারে পুমাণাভাব তথাপি নানা অধিকরণের ম্বরণ কল্পনা অপেক্ষা অভিরিক্ত অভাব পদার্থের যাকারে যে লাঘর সেই অভার পদঃর্থর পুমান হয় ৷

ইদানী সকল পদার্থের সাধর্ম্য ও বৈধর্ম্য কহিতে আরম্ভ করিতেহেন 1

समानामः विस्तृषे भेवतः दिव मुचते । नशानामः नि नाय्या उद्धाः प्राप्ति मूह्या ।

জেরত্ব অ:দি ধর্ম দুব্য আদি সপ্তু পদার্থের সাধুর্ম্ম্য হয় যে হেন্ড জেরত্ব আদি ধর্ম কেবলাছরী। অভ্যন্তাধারের অনুভিযোগী অর্থাৎ ৰয় বারী যে পদার্থ ভাষার নাম কেবলাখরী। জেয়ত পরে জান বিষয়ত্ব। আদি পরে বাচ্যত্ব প্রেয়ত্ব অভিবধ্যত্ব ও বস্তৃত্ব ইত্যাদি। বাচ্যত্ব পরে ইত্যার বিষয়ত্ব। প্রেয়ত্বলারে গ্রুমা-বিষয়ত্ব। অভিধেয়ত্ব পরে অভিধাবিষয়ত্ব। অভিধা পরে পকি।

> म्बादयः पष भावा अनेके सम्वायिनः । सत्तावन्त स्वय स्ताया मुखादिनिम् खिनायः।

দুব্যাদয়: পঞ্চ ভাষা অনেকে সম্বায়িনঃ। সত্তাবস্ত জ্বয় স্তাদ্যা গুণাদিনির্ভণক্রিয়া:।

দুব্য আটি পাল পুকারপদার অনেফ ও সমবায়ী কয় তথাচ দুব্য দি পাল শদার্থের সাগর্ম্য অনেকর ও সমবায়ী কয় তথাচ দুব্য দি পাল শদার্থের সাগর্ম্য আনেকর ও সমবায় রিশিন্ট শান্তের আছে তথানি ভাবর কিশিন্ট শানেকর নাই! সমবায় বিশিন্ট বু এরপ অর্থ নহে কিন্তু সমবায় বিশিন্ট বু এরপ অর্থ নহে কিন্তু সমবায় বিশিন্ট বু বু আদি পদার্থে সমবায় বিশিন্ট বু বু আদি ভিন পদার্থ কর বু আদি ভিন পদার্থ স্বার আশুয় ও৬ আদি হয় পদার্থ ওগরহিত ও কর্মারহিত হয় তথান দুব্য দি অয়ের সাগর্মী সভাশুরু ওণাদিষট্যের সাগর্মী ওগরহিতর ও কর্মারহিত হ

सीमानै परिद्योगानु सर्वे त्रात्यादथा मताः। पारिमाण्डन्यभिद्रानां कार्यातमुदाद्वतं।

मानान्य পরিধী नाखु मह्त बाजा नियान्छ। । পারিমাও ল্যভিষানা কারণ রমুদাহ্ত ।

স্থান; আদি চার্র পদার্থ সামান্তর্হিত হয় যে হৈত সামান ন্যাদি পদার্থে সামান্যাদি পদার্থ থাকে না ৷ এক পারিমাওলঃ ভিন্ন যে বস্তু পে কারণ হয় অর্থাৎ পারিমাওলঃ ভাহারও কারণ হয় না তথাত সামান্যাদি পদার্থ চরক্টেরের সাধর্ম্য সামান্যরহিতত্ব এবং পারিমাঞ্জ্য ভিল্প পদার্থের সাধর্ম্য কারণত্ব । পারিমাঞ্জন্য শব্বে পর্মাণ্র পরিমাণ। পরিমাণ পদার্থ আপনার আশুয়ে আরম্ভ যে দুব্য তাহার আপনার সজাতীয় উৎকৃষ্ট পরিমাণ জন্মায় যেমন কপালের পরিমাণ কপালে আরম্ভ ঘটের আপনার সজাতীয় উৎকৃটি, পরিমাণ জন্মায় অণ্ড বরণ যে পরমাণ্র পারমাণ সে কিন্তু তেমন নহে তাহা হইলে যেমন্ মহতে আরম্ভ বন্ধর মহত্ত-রত্ব হয় তেমন পরমাণুতে আরম্ভ যে দুক্ তাহার পরমাণ্ছইতে ও স্ক্রান্তা হইতে পারে অত্তর্ব ঘ্রণকের পরিমাণ পরমাণ্র পরি-মাণ জন্য নহে বিদ্ধান্ত গ্রান্ত ইহা পশ্চাৎ কহিবেন।

কারণুত্ব কি এই ভিজ্ঞাশাতে তাহার নিরপণ করিতেছেন।

श्रान्यसः सिडिश्रून्यसः नियतः पूर्व्ववित्तः। बार्खलं भवे नसः श्रेविधः परिकोर्त्तिः। समवाशिकार्खलं मऽशः श्रेयमऽप्यऽसमवाशिश्रेतृतं। सर्वे नीयनयशैक्षृतीयंमुकं भिमित्तं श्रित्तं। यत्तसमवेतं कार्थः भवति श्रेयं तु समवत्त्रिकार्खं तत्। तत्रासन्नं वितीयं जनक मार्भा परं तत्तीयं म्यात्।

অন্যথা সিদ্ধিশূন্যস্য নিয়তা পূর্ষবৃত্তি তা।
কারণত্ব ভবেত্তস্য তৈবিশ্বা পরিকীতি তি।
সম্বায়িকারণ্ড্মইথ জ্ঞেয়মইপ্তেস্বায়িহেতৃত্ব।
এবং ন্যায়নয়জ্ঞেস্তীয়ন্ত্বং নিমিত্ত হেতৃত্ব।
যৎসম্বেত কার্য্য ভবতি জ্ঞেয়ন্ত সম্বায়িকারণ তথা
ভবাসন্ধ দিতীয়া জনক্মা ভ্যাপের তৃতীয়া স্ঠাত্য
আন্থাসিলি শ্বা জ্ঞান নিয়ত পূর্যবর্তা যে পদার্থ তাহার

কারণত্ব হয় অর্থাৎ অন্যথাসিদ্ধি বরপদোবরহিত অথচ কার্য্যের অব্যবহিত প্রকালে কার্য্য সমানাধিকরণ অভারের অপুতিযোগী যে পদার্থ ভাষার নাম কারণ বস্তুতঃ যে পদার্থ বিদ্যমানে ও অবিদ্যমানে কার্য্যের বিদ্যমানতা ও অবিদ্যমানতা হয় পেঁই পদার্থ কারণ হয়৷ সূত্রাভাবে বস্ত্রাভাব কপালকপালিকার সংযোগাভাবে ঘটাভাব এবং পুন্যাভাবে সুধাভাব ইতপ্লি হয় অতএব সূত্ৰ কপালকপালিফার সংযোগ ও পুণ্য ইত্যাদি বন্ত্র ঘট ও সুথ ইত্যাদির কারণ হয়। অন্যথা সিভির বারণার্থ পূথম দল! কদাচিং ঘটাদি কার্যেরে পূর্ববর্তা যে তৃণাদি তাহার বারণার্থ নিযুত পদ ! কার্যের অব্যবহিত পুর্বভালে যে অবশুঃ साग्री क्य (महे कार्य) समानाधिकतन खर्डार्यत ख्रुडिरयाजी इत्। অন্যথাসিদ্ধির নিরপণ পশ্চাৎ করিছা কারণত্ত্ব- কারণের পর্যা সেই কারণত্ব তিন পুকার হয় সমবায়িকারণত্ব অসমবায়ি-কারণুত্ব ও নিমিত্বারণত্ব। যে বন্ধতে সমবেত ছইলেকা-য্যের জীয় হয় সেই বৃদ্ধ সমবায়ি কারণ তাহার ধর্ম সমবায়ি-কারণত্ব ৷ মঞ্চেকর প্রমাণু বল্লের সূত্র এবং ইটের কপাল ইত্যদি l সমবেত শবে সমবীয় সম্বন্ধ বর্তমান l এব[্]সমবায়ি-কারণে আসন অর্থাৎ সমবায়িকারণের সম্মু বিশেষ্ট যে কারণ সেই অসমবায়িকারণ তাছার ধর্ম অসমবায়িকারণত্ব ! দ্যপুকের পরমাণুসংযোগ বন্ত্রের সূত্র সংযোগ হটের কপাল সংযোগ এবং ঘট পরিমানের কপাল পরিমাণ ইত্যাদি। এবং এই উভয়-কারণ ভিন্ন যে কারণ কেই নিমিত্ত কারণ ভাহার ধর্ম निभिन्न कार्याच्या चरहेर मधामि कामूत उद्घामि अव॰ पान्टक्त দীৰর ইত্যাদি। এ স্থানে উহা অবধান করিবং কৃতিৎ সমনায়িকারণ নাশে কাৰ্য্য নাশ হয় কৃচিৎ অসমীবায়িকারণ নাশে কার্য্য নাশ হয়। যেমন বঁপাল নালে, ঘটা নাল এবং প্রমাণু সংযোগ নালে। ছ'পুক নাশ হয়। এই সমবায়ি পুভৃতি কারণ অসাধারণ কারণ

আনিবা ইশ্বর ইশ্বরের জান ইচ্ছা ও যতু এবং কাশ দিক্ পাগভাব ও আষ্ট্র এই অন্ট প্রার কারণ কার্য্য সকলের সাধারণ কারণ হয় ! যাহার কারণত্ব কল্পনা ব্যতিরেকে ও অন্য পুকারে কার্য্য দিছি হয় ভাঁহার নাম অন্যথ্য সিভ তাহার ধর্ম অন্যথা সিভি!

অন্তথা সিদ্ধ কত পুকার হর তাহা কহিতেছেন !

येनसच्च पूर्वभावः कार्यमादाय वा यस । सम्प्रमति पूर्वभावे दाते सत् पूर्वभाव विद्यानं । जनकंप्रति पूर्ववर्तिताम् प्रस्ति नयस्य ग्रद्धते । स्रतिरिक्तमः याद्धि यद्भे जियतावस्यक पूर्वभाविनः । सते संवा अय्यासिका दस्त्र नादिकमादिमं । सटादे। दग्रस्त्र पादि वित्तीयमः पि दर्शितं । तटतीयन्तु अवे स्त्रीम कुलाल जनके । प्रसार । प्रकीरासवादिः स्वादेते स्ववस्यकस्त्र सो ।

যেনসুহ পূর্বভাবিঃ কার্ণনাদায় বা যস্য। অন্য•পুতি পূর্বভাবে-জ্ঞাতে যথ পূরভাব বিজ্ঞান। জনক•পুতি পূর্বির্তিতামহপরিজ্ঞায় নযস্য গৃহ্যতে। অতিরিক্তমহথাহপিয়ন্ডবেদিয়তাবশুক্রপূর্বভাবিনঃ

এতে পঞ্চাহন্যথাসিত্ব। দণ্ডত্বাদিক মাদিন । হটাদৌ দণ্ডক্পাদি বিতীয়মহপি দশিত । তৃতীয়ৃত্ব ভবেছে গ্রাম কুলাল ক্লনকোহপক্ষ। পঞ্চারাসবাদিঃ স্থাদেতে স্বাবশ্যকত্ত্বহসৌ।

কাষ্টের-পৃতি কাং দের যে রপে নিয়ত পুর্ববর্তিতা অর্থাৎ যে ধর্ম কার্ণতাঃ অবছেনক হয় এবং করদের ঘারা যাহার পুতি কার্যের নিয়ত পুর্বব্রিটা এবং কার্যান্তরের পুতি পুর্বব্রিতঃ ভানের অল- ন্তর যাহার পুতি কার্যের পূর্ববিভা জ্ঞান হর এবং কারণের পুতি পূৰ্বভিতা জ্ঞান ব্যতিরেকে যাহার পুতি কার্য্যের পূর্বভিতা জ্ঞান না হয় এবং যে এই অন্তথা সিদ্ধ চৰউয়হইতে ভিন্ন হয় কাৰ্য্যের মবঁশ্য নিয়ত পূর্বতী অধাৎ কার্য্যের পূর্কালে কার্য্য সমানাধি-कर्न बाजादार अभुजित्याती अहे नी व विनि बद्देश कार्याहर অন্তর্গাসিত হয় যে হেতু অবশ্য কুপ্ত নিয়র্তীপূর্বর্তি অক্ট্রের কার-ণত্ব সম্ভৱ ছইলে ইছারদিগ্রের কারণত্ব কল্পন অকিঞ্চিৎ কর যেমন পুত্যক্ষে মহত্ত্বে কারণস্থলম্ভব হইলে অনেক দুব্যবতের কারণস্থ কল্পন অকিঞ্চিৎ করে ৷ এব॰্এই পঞ্চ অন্তথা সিঁছের মধ্যে ঘটাছি ৰৱপ কাৰ্যেঃ দণ্ডত্বাদি পুথম অন্যথা সিদ্ধ যেছে ব ঘটাদি কাৰ্যে 🔉 পুতিরভোশিকরিশের দণ্ডতাদিরপে নিষ্ঠ পূর্ববর্তিতা এবং দণ্ডরপাদি षिकीय अने तथा निष्क य दि स चौ निकार्य द शुक्ति अक्ना निकार शि ম্বরণ কারণের দারা নিয়ত পূর্বতিতা এবং আকাশ তৃতীয় অন্যথা সিদ্ধ যেহেত্ত ঘটাদি কার্যে)র পুতি আকাশের নিয়ত গ্রুবর্তিতা জ্ঞানকার্য্যান্তরের পুত্তি পূর্ব্বর্তি চা জানের অনন্তর হয়যে হেত আ-কাল লব্লের সম্বারিকারণ অতএব প্রথমতঃ লব্লের পুতি পূর্ববর্তিতা জ্ঞান হয় পরে ঘটাদির পুতিক্য় এবং কৃষ্টকারের পিতা চর্ম্ব অন্যথা সিভ যেহেত ঘটাদি কার্য্যের পুতি কুষ্টকারের পিতার নিয়ত পূর্ব-বর্ত্তিতা জান,পুথমতঃ কুম্বকার স্বরূপ কারণের পুতি পূর্ববর্তিতা জান বিনাহয়না এব**্রাসবাদি পঞ্চম অন্**রথাসি**ত্যে হেত ঘটাদি** কার্য্যের পুতি রাস্ক্রাদি এই অন্তথা সিদ্ধ চন্ত্রইয়হইতে ভিল্ল হয় এব॰্ এই সকল অন্তর্থানিছের মধ্যে পঞ্চম অন্তথানিছ আবশ্যক হয় যে,হেন্ত ভাহাতেই এই চারি পুকার অন্যথাণিত চরিতার্থ रस त्य (इ.स. कुछ नियठ পूर्ववर्षि मधामिकार (१८० यमि घरामि কার্য্যের সম্ভব হয় উবে দণ্ডতাদির কারণত্ব কল্পনে পুয়োজনাভাব ও গৌরব যে হেন্দ্র ঘটানি কার্ম্ব্যের পুতিনগুনি যে সহরে কারণ হর দগুরাদি তাহাহইতে গুরুতর সমুনে কারণ হয়। ভারাজ্য সহনে

ষটের পুতি দণ্ড জন্য যে চক্রের ভুমণ ডজ্জন্য যে কপাল কপালিকা ভাষার অধানুরত্ব সম্বন্ধে দণ্ড কারণ এবং দণ্ডত্বের আশুর যে
দণ্ড ডক্জন্য যে চক্রের ভুমণ ডক্জন্য যে কপাল কপালিকা
ভাষীর আশুর্ত্ব সম্বন্ধে দণ্ডত্ব কারণ এবং দণ্ডরপাদির কারণত্ব
কল্পনে ও এই রপ গৌরব জানিবা।

समवाबि बीरबलं द्रयशिव विश्वेषं।
गुबकमी मात्र हति शेय मध्याश्यासमवायि शेतुलं।
गमवाद्रिका ११३० पुर्योरगाय विद्यास्थ।
सावर्षि का ११३० पुर्योरगाय विद्यास्थ।
सावर्षि का १९३१ मध्या १९४१ मम्बासि स्टूड्र

সমবায়িকারণত্ব কেবৰ দুব্য বৃত্তি হয় এবং অসমবায়িকারণত্ব ৪ণ কর্মানমাত্র বৃত্তি হয় অথীচ সমবায়িকারণত্ব দুবেরর সাধর্মার এবং অসমবায়িকারণত্ব ৪ণক্মের সাধর্মার 1

শ্বন্ধনি ব্যাসন্ত্র নামির বিদেশী থে ।
ক্রিয়াহীনা নবনোন্ত হয় ন স্ক্রীনিরা।
অন্যক্রনি ত্যদুব্যেভ্য আন্থিতত্বমিহোচ্যতে।
ক্রিত্যাদীনাণ নবানাস্থু দুব্যত্ব গুণবোগিতা।

নিতঃ দুবাছাইতে ভিন্ন যে পদার্থ তাছার সাঁধর্ম্য আপ্তিত্ব।
নিতঃ দুবা কাছার ও আপ্তিছার না কিছু আপুর হয়। এই
আপ্তিজ্ব সমবায়াদি সমুদ্ধে জানিবা অন্ধানিতঃ দুবাওও কালিকাদি সমুদ্ধে কালাদির আপ্তিত্ব থাকে। পরমাণ্ আকাশ কাল
দিক্ ও আল্লা এই পঞ্চ দুবা নিতঃ। এবং প্থিবাঃদি নব দুবাের
সাধর্ম্য দুবাজ্ব ও ওগাপুরত্ব।

चितित्रेसं तथातेत्रः पदलेशिन स्वयः । पराध्यासमूर्णल क्रिया नेगास्रवा स्रमो ।

কিতির্বল তথাতেজঃ প্রনোমন এবচ। পরাহপরত্ব মূর্ত্তব্ব ক্রিয়া বেগাশুয়া অমী।

পরত্ব অপীরত্ব মূর্তত্ব ক্রিয়াশুয়ত্বও বেগাশুয়ত্ব এই পঞ্চ পৃথিৱী কল তেজঃ বায়ুও মনং এই পঞ্চ দুবেরর সাধর্মা, হয়। যে পদার্থের পরিমাধের সামা হয় তাহার নাম মূর্ত্ত। আকাশাদি তাুদ্ধ নহে যে হত্ত আকাশাদির পরম মহত্বপরিমাণ।

कैतनसामिक्षां सर्वगततं परमं महत्। चित्रपदि पत्र भूतानि चतारि सर्पवितिह। १२५७माः সর্বগতত্বः প্রকাশ মহত।

কালখাত্রদিশা• সর্বগতত্ব• প্রকৃষ• মঁহত। ক্ষিত্যদি পঞ্চ ভূতানি চন্ধার ক্লবিট্রহি।

আকাশ কাল দিক্ও আঝা এই চারি দুবেরর সাধর্ম সর্গতত্ব আর্থাৎ বিভৃতৃ এবং পরমমহত্ব আর্থাৎ সর্গাৎক্ষ পরিমাণিবতু । এবংপ্রিবী আদি প্রাণ্ড্রত ভূত নামে খ্যাত হয় তুলাচ প্রিব্যানি পঞ্চ দুব্যেরঃ স্থিয়াঁঃ ভূতত্ব । সর্গ মূরের সংযোগ বিশিক্ত যে পদার্থ তাহার নাম বিভৃ । আকাশাদি তাদৃশ হয় । আখ্য ভিন্ন অথচ বিশেষ প্রনের আশুর যে পদার্থ তাহার নাম ভৃত । দোনাদি ম্বরুপ বিশেষ প্রনের আশুর যে আঝা ভাহাতে অভিব্যাপ্তি বারণার্থ আয়া ভিন্ন এই ভাগ প্রণাশুর যে কালাদি তাহাতে অভিব্যাপ্তি বারণার্থ বিশেষ পদ । কালাদিতে বিশেষ প্রাণ নাই । লক্ষেত্রতে লক্ষ্যেতেরৈর ভেদের অনুমান জন্মীয় যে তাহার নাম লক্ষণ সেই লক্ষ্যেত্ব পান্ত গলকমুলাদি বিশিক্তিত গোতু এক পুর বিশিক্তত্ব আহত এবংশাঝাপালুবাদি বিশিক্তিত গোতু এক পুর বিশিক্তত্ব আহত এবংশাঝাপালুবাদি বিশিক্তিত গোতু এক পুর বিশিক্তত্ব চারি দুব্য স্কর্শ বিশিষ্ট তথাচ পৃথিব্যাদি দুব্য চত্তইয়ের নাধর্ম্য স্কর্শানুষ্ঠ !

দ্ব্যেমাৰনুষ্ধারে থানাছছ হীবিৰা।
শ্ব্যাত্তিন ক্ষিনি বিছিন্ন নুষ্ঠান নিট্নি নুষ্ঠান নিট্নি নিট্নি নিট্নি নিট্নি ।
শ্ব্যাপ্তবৃত্তিঃ ক্ষণিকো বিশেষ গুণইব্যাতে।

পৃথিবী আদিচারি দ্বের দ্বেরর আরম্ভ হয় তথাচ পৃথিবরাদি চত্ত দুবেরর সাধর্মার দুবারম্ভকত্ব। এবং আকাশ ও আফার যে বিশেষ ধান সে অবরাপর বৃত্তি ও ক্ষনিক হয় তথাচ আকাশ ও আফার সাধর্মার অবরাপর বৃত্তি বিশেষ ধানর আশুরত্ব এবং ক্ষনিক বিশেষ ধানর আশুরত্ব শাহার একর্দিশাবছেনে উৎপত্তি অন্যদেশাবছেন্দে আভাব সেই অবরাপর বৃত্তি হয় এবং মাহার ত্তীয় ক্ষণে ধুল হয় সেই ক্ষনিক হয়। আকাশ ও আফার বিশেষ ধান যে শারু ও আনানি তাহারা এভাদ্শ হয় যে হত্ত আকাশে শাবের কোন দেশাবছেদে উৎপত্তি কোন দেশাবছেদে অভাব ও পুথম ক্ষণে উৎপত্তি ভিতীয় ক্ষণে স্থিতি তৃতীয় ক্ষণে বিনাশ দেখিতেছি এবং আফাতে ও জানাদির শারীবাবছেদে উৎপত্তি ছটাবছেদে অভাব ও পুথম ক্ষণে উপ্পত্তি দিতীয় ক্ষণে বিনাশ দেখিতেছি এবং আফাতে ও জানাদির শারীবাবছেদে উৎপত্তি ছটাবছেদে অভাব ও পুথম ক্ষণে উৎপত্তি হিটায় ক্ষণে বিনাশ দেখিতেছি। পৃথিব্যাদির বিশেষ ধান ব্যাপর বৃত্তি ও বহুকাল স্থায়ী অতথ্যৰ ভাল্যতে অভিব্যান্তির আশক্তা করিবা না।

रूपम्बतः प्रवाद्य विक्रियात् प्रधमणिकं। गुब्बी दे रसवतो दयाने मितिकोमर्वः।

क्रमुद्द भुज्यक यागिम्तर भुष्मिकि । भूक्षी (व तमव्जी पर्धार्मिकिकामुदः।

পৃথিবী আদি তিন দুব্য রূপ বিশিষ্ট দুবত্ব বিশিষ্ট ও পূড়া-ক্ষের বিষয় এবং পৃথিবী আদি দুই দুব্য গুরু ও রস্কিশিষ্ট হয় এবং পৃথিবী ও তেজের যে দুবত্ব সে নৈমিত্তিক হয়,তথাচ পৃথি-ব্যাদি দুব্য ত্রেরের সাধর্ম্য রূপবত্ব দুবত্বত্ব ও পূড়াক্ষ বিষয়ত্ব এবং পৃথিব্যাদি দুব্য ত্রেরের সাধর্ম্য গুরুত্ব ও রম্ভুবত্ব এবং পৃথিবী ও তেজের সাধর্ম্য নৈমিত্তিক দুবত্ব।

स्रातानाः भूत्वतीः स्विधेषगुस्यागिनः । यद्वां यसः साधम्यं वैधम्यं मितरसातत् । जाङ्गात्ना ज्ञवंशां है दिश्लिषशून्रशृशिनः । यक्टुकं यमंऽ माध्याऽ दिश्लाशिकातमऽज्या

আয়া ও প্রিব্যাদি পঞ্ছত বিশেষ গুণের আশুর °তঁথাচ আয়ার ওপ্থিব্যাদি পঞ্ছতের স্থাধর্মী বিশেষগুণাপুরত্ব ৷ এব॰ জেয়বাদি বিনা যে যাহার সাধর্মী উক্ত হইয়াছে লে অনিরে বৈধর্মী হয় জেয়বালি কাহীর ও বৈধর্মী হয় না যে হেক কৈব-শাষ্যী হয় ৷

বায়ুর নব ৪৭ তেলের একাদশ ৪৭ ইত্যাদি পুাচীন কারিকার অনুসারে পৃথিবী আদির ক্রম পরিভ্যাগ করিয়া বায়ু আদির ক্রমে কোন্দুবেরে কঠীপুকার ৪৭ ভাছা কহিতেছেন !

> सर्गादयाउँ विमायः संसारी मन्ती गुमाः । सर्गादयाउँ र वेगस मुक्तस मनतः । सर्गादयाउँ र वेगस मुक्तस मनतः । रूपं रसस्या सेद्देशारियोते सनुदेशः । सेद्दीमा गथ्युताः सितावेते सनुदेशः । नुस्मादिस्य संस्कृदि प्रसन् भावनात्त्राः । सम्बद्धिस्य संस्कृदि प्रसन् भावनात्त्राः । सम्बद्धिस्य संस्कृदि प्रसन् भावनात्त्राः । सम्बद्धिस्य संस्कृदिशेः सन्दन्न तेष से ।

इंग्लादयःपचनुडिरिकायक्षे विषये। परार्थरलं संख्याद्याःपच नेगस मानसे।

শার্লাদর্যাই গ্রেবিদাখ্যসংস্থারোমকতোগুণাঃ।
তেওঁ স্পর্লাদ্রোরপণ দুবোবেগণচ তেজসি।
স্পর্লাদরোই গ্রেবিগণচ গুক্তৃঞ্চ দুবতৃক।
কপণ রস্ত্রথা সেহোবারিশ্যেতে চতুর্দশা।
স্বেহানি গর্মুই সংখ্যাদি পঞ্চক ভাবনা তথা।
ধর্মাইধর্মোগুণা এতে আত্মনঃ সুগ্রুচ তুর্দশা।
সংখ্যাদিপঞ্চক কাল দিশোঃ শব্রুচ তেচ থো
সংখ্যাদয়ঃ পঞ্চ বুজিরিছা সহ্লোহপিতে ব্রো।
পরাইপরতৃ: সংখ্যাদ্যাঃ পঞ্চ বৈগণ্য স্থানসে।

শ্বশি সংখ্যা পরিমাণ পৃথজু সংযোগ বিভাগ পরত্ব অপারত্ব ও সেগ এই নয় এণ সায়ুব। এবং শ্বশ সংখ্যা পরিমাণ পৃথজু সংযোগ বিভাগপরত্ব অপা তুরুপ দুরত্ব ও বেগ এই একাদশ এণ তেলের। এবং শ্বশ সংখ্যা পরিমাণ পৃথজু সংযোগ বিভাগ পরত্ব অপারত্ব বেগ একও দুরত্ব রূপ রস ও পুরুষ্ এই চন্তর্দশ এণ জলের। এবং শ্বশ সংখ্যা পরিমাণ পৃথজু সংযোগ বিভাগ পরত্ব অপারত্ব বেগ একত্ব দুরত্ব রূপ রস ও গানু এই চন্তর্দশ এণ পৃথিবীর। আয়া দুই পুকার জীবায়া ও প্রমায়া। জীবায়া বন্ধন ও মোচ-নের যোগ্য এবং পুতিব্যক্তি ভোদ দিয় পরমায়া ইম্বর হয়েন তেই বনুন মোচন রহিত এবং অধিতীয়ণ তাঁহার মধ্যে বৃদ্ধি সুধ্ দুংধইক্যা ঘেষ যত্ব সংখ্যা পরিমাণ পৃথকু সংযোগ বিভাগভাবনা ধর্ম ও অধ্যম এই চন্তর্মন গুণ জীবাঝার। এবং সংখ্যা পরি-মান পৃথক্ত্ব সংযোগ ও বিভাগ এই পঞ্চ গুল কালের ও দিকের। এবং শবু সংখ্যা পরিমান পৃথক্ত্ব সংযোগ ও বিভাগ এই হর গুল আকা, শর। এবং সংখ্যা পরিমান পৃথক্ত্ব সংযোগ বিভাগ বৃদ্ধি ইক্ষা ওয়ত্ব এই অক্টগুল ইম্বরের। এবং পুরত্ব অপরত্ব সংখ্যা পরিমান পৃথক্ত্ব সংযোগ বিভাগ ও বেগ এই অফ্টগুল মনের। সমূতি পৃথিবী আদি নবঃশুবেরে যথাক্রমে নিরপন করিতেহেন।

तत्र सिति गंथहेतु नेला रूपवती मता।
यिद्धस्तु रसस्ति ग्रथस्तु विविधानतः।
सर्गत्तियास्तु विवेशे प्रश्नुम्माद्धाति पावतः।
निकादिनस्य सा हेधा नियामाद्यास्त्रस्य।
स्रिनस्यातु तद्यासात् स्नेवाद्ययवयोगिनी।
साच विधा भेरेहे इद्धियं निययस्त्रस्य।
येतिवादिभवेदेष इद्धियं निययस्त्रस्य।
विद्यासार्

তত্র ক্ষিতি গ্রহেণু নানাকপবতী মতা।

বিভ্বন্ত ব্রহতত্র গরুত্ব দিবিধামতঃ।

স্পর্শন্ত গরুত্ব গরুত্ব দিবিধামতঃ।

স্পর্শন্ত গাড় বিজেয়োহ্য হনুকাহলীত পাকজঃ

নিত্যাহনিত গাড় সা দেখা নিত্যাস্যাদণুলক্ষণা।

অনিত্যাত্ব তদন্যাস্যাত সৈবাহবয়ব বোগিনী।

সাচ বিধা ভবেদেহ ইন্দিয়া বিষয়ন্তথা।

বোনি দ্বানি ভবিদেহ ব্যাগ্রান্ত উদাহ্তঃ।

त्मरे बय मुख्द प्रक्षा भृथियी शत्बुद ममवाद्रिकावन अवर খেত পীত নাল ওরক ইত্যাদি নানা পুকার রূপের আপুর হয় ! এবং-প্রিবীর রদ হয় পুকার মধ্র লবণ কটু ডিক অমু ও কবীর ৷ এবং পৃথিবীর গানু দুই পুকার সৌরভ ও অসৌরভ এবং পূথিবীর স্বৰ্ণাকর অনুবুলীত অর্থাৎ না শীত না উত্ত कनछः विकाछोत्र छैथोह (य मुद्र) शानुत नमवाशिकातन इक ভাছার নাম প্রিবী। এই সকলে পাষালে গনুভাব পুরুক অব্যান্তির আশহা করিবা না যে হেন্ত'পাষাণে ওঁ গদ্ধ আছে কিছ অতি অপুকাশিত একারণ তাহার বোধ হয় না অন্যথা •পাষাণের ভবে কিরপে গদ্ধের বোধ হয়। যে দুব**্র দুবে**রর थु॰न जन्द्र इत्र (न मुब्द) (न'मुख्द्र) नमवाजिकादन जन्द्र इद्र अह নিয়মবরতঃ পাহান ধুণদ জন্য যে পাষান ভন্ম ভাছাতে পাষানের সমবায়িকারণ যে পাষাণের পারমাণু ভক্তনাতু সিম্ব হর যেমন মহাপটের ধুত্ব জন্য যে থণ্ড পট্ট ভাছাতে মহাপটের বমবাত্লি-কারণ যে পুরু ভজ্জনাত্র সিদ্ধ আছে তথাচ পাবাণ পরমাণু জন্য যে পাষাণ ভষা ভাছাতে গানু দর্শন পুযুক্ত পাষাণ পরমাণু জনঃ যে পাষাণ তাহাতে ও শৃতরা গানু সিদ্ধ হয় ! এবং যে যাহার সম-বায়িকারণ হয় বে সমবার সমুনে, তাছার আশুর হয় বেমন ঘটের সমবায়িকারণ যে ৰূপাল সে সমবার-সমূদ্রে ঘটের আশুর হয় তেমন গনের সমবারিকারণ যে প্রিবী সে ও সম-বায় সমূনে গনের আশুয় হয় অতএব যদু শি যে দুব্য গনের व्यानुग्र इत्र जाहात नाम शृथिती अहे ममू नृक्षन मञ्चत हक् उशालि প্ৰিবীড় জাভির পুমাণ দর্শনার্থ নমবায়ি কারণ পর্যন্ত কহিলাছেন ভাহা অবগত হও ৷ জাভি তিন পুকার হয় কার্ণতাবচ্ছেদক দিছা कार्य जावत्क्रमक निष्ठा ও পুত क्रिनेषा । मुव द्वामि कां कि कांव्रन-ভাবদেহক শিদ্ধা য়ে ছেন্দ্ৰ দুৰ্গাদি বৃদ্ধি যে সংযোগাদির কারণতা जाहात **चराष्ट्रतक नुवादाणि हम् । नृ**श्वाणि जाकि कार्य जाद-



চ্ছেদক নিদ্ধা যে হৈও নুখাৰি নিষ্ঠ যে ধৰাৰির কার্য্যতা ডাহার खारक्षक मुसदानि रहा। कर्यदानि जाठि भुष्ठाक निका, व दिस उर्द्धाननावि कर्म गर्मा वक ब्राम् मृष्ट इरेट्डि ! प्राचावि লাভি কিন্তু পুত্যক্ষ নিদ্ধা হয় না যে হেন্ত গৃত তেজঃ পুজ্তি বুবেটা কথন কাচিন্য কথন বুবস্থ দেখিতেছি ৷ স্বস্থানি আতি পুত্যক निष्ठां कारवडावरक्ष्मक निष्ठा य एक बनावि नर्शा अ**कें अरलंड**े ৰ্ট্ট হয় এব° জলাদি নিও ১০ স্থেহের সমবায়িকারণতা ভাহার व्यवस्कृतक जनदानि इते। यहेदानि जानि शुनुक निद्धा छ কার্য,তাবচ্ছেদক নিদ্ধায়ে ছেব্র সকল ঘটেরই এক অবয়ব এবং ঘটাদি নিঠ যে দণ্ডাদির কার্য্যতা তাহার অবক্ষেক ঘটবাদি হয় ! ধর্মবাদি লাভি কারণভাবচ্ছেদক সিভাও কার্যভাবচ্ছেদক সিদ্ধা যে ছেত্ত ধর্মাদিনিষ্ঠ যে স্থাদির কীরণভাও যাগাদি জিকার কার্য্যতা তাহার অবচ্ছেদক ধর্মবাদি ইয়। ধণবাদি কাতি যে মণে নিভা হ্য তাহা গুণু পুকরণে ব্যক্ত হইবে তথাচ পৃথিবীইকাতি কারণতাবক্ষেক সিদ্ধা হয় যে হেওঁ পৃথিবী নিষ্ঠ যে গনেরীসম-বায়িকারণতা ভাহার অবচ্ছেদক পৃথিবীও হয়। কারণ বৃত্তি যে ধর্ম বিশেষ সে কারণতাবচ্ছেদক হঁয় এব°্কার্য্য বৃদ্ধি যে**ধর্ম বিশেষ সে** कार्य) ठावरक्षक एव । अव॰ कमामित क्रम अवन अक्मुकाव मुखिबीत নানা পুকার বায়্রী রুর্ণ অপাকর পৃথিবীর পাকরতে হৈছ পাক পুযুক্ত পৃথিনীর কথন কচিনত্ব কথন কোমণত্ব দেখিতেছি অত-এব পৃথিবী নানা রুপের, খ্বাপুরহয় ইত্যাদি বাজের যারা পৃথি-বার এই তিন পুকার লক্ষ্ণ জাত করিয়াছেন। যে দুব/নানা ছপের আপুর কিয়া বড়িধ রসের আপুর কিয়া পাকর স্লর্লের আপুর হয় ভাছারুনামপৃথিনী। এবং দেই পৃথিনী দৃই পুকার নিভ্যা ও অনিভ্যা ভাছার মধ্যে প্রমাণুরণা পূলিবী নিঁত্যা ও ছ পূজাদি রুপা পুরিবী অনিভ্যা। সেই অনিভ্যা পৃথিৱী অবয়ৰ বিশিষ্টা হয়। এ স্থানে পুঞাকার পরমাণুর বারাই ঘটাদির উপপত্তি হইতে পারে অত-

এক প্রমাণ্হইতে ভিন্ন ঘটানি বরণ অবরব বিশিউ প্রিবীতে পুমাণাভাবের আশক্ষা করিবানা যে হেত যেমনখান্য পুল্কে এক শান্যরাশি এই রপ একব পুতাতি হয় তেমন পরমাণু পুঞ্জ বরুপ ঘটাদিতে ও যদ্যপি একত্ব পৃতীতি সম্ভৱ হয় তথাপি পুত্যক্ষ কারণ যে মহস্ত উভ্ত কুপ প্রমাণ্ডে তাহার অভাব পুযুক্ত ঘটাদিরও পুত্রক হৈটতে পারে না যেমন পিশাচাদির অতীন্দ্রিত্ব পুযুক্ত লিশাচাদি সমূহের পুত্যক্ষ হয় না তথাচ এই রূপে পুমাণ সিভা যে অবয়ৰ বিশিক্ট ঘটাদি মুরুণা পৃথিবী তাহার উৎপত্তি ও বিনাল পুত্যক্ষ সিদ্ধ অভএব অবয়ব বিশিষ্ট পৃথিবী অনিভ্যা হয় এবং যেমন অণ্ডুও মহত্ব এই দুই পরিমাণের মধ্যে মহত্ব পরিমানের শেষ গরাণাদিতে আছে তেমন অণুত্র পরিমানের শেষ অবশ্য কোন মন্ত্রতে আছে অতএব যে বস্তুতে অণুত্ব পরিমাণের শেষ আছে সেই বস্তুই পরিমাণু হয় তথাচ এই রূপে প্নাণ বিদ্ধব্যেপরমাণু তাহার উৎপতি ও বিনাপেতে পুরাণাভাব পুমুক্ত পরমাণু ষরপাপৃথিবী নিড্যা হয়। পেই অব্যব বিশিকী নিড্যা পৃথিবী তিন পুঁকার দেহ ইন্দিয় ও বিষয়। তাহার মধ্যে দেহ দ্ই পুকার যোনিজ ও অযোনিজ। সেই যোনিজ দেহ দুই পুকার জরায়ুজ ও অওজ ! মান্যাদির দেহ জরায়ুল ! পাঁচ্ছ পুভৃতির पर बंधक ! **बायां**निक पर खनक डेडिका स्नापक पूर्वि নানা পুকার হয়। ক্রমি ও মশকাদির দেহ বেদজ। বৃক্লাদির দেহ উভিজ্ঞ । নার্কির দেহ পাপজ। মানুষাদি পরীরের পার্থিবছের भुमान नानुपति। मानुषाति भहीरत कुम । उष्टापित मर्भन भुयुक যে জনীয়ন্ত্র ও তৈজগড়াদির জ্ঞান দে ভূম মাত্র য়ে ছেভংকুদাদির বিনাশ কালে ও মানুষাদি শরীরে শরীরত্ব জ্ঞান ও গন্ধাদি হেৰক পাर्थिवय क्रांन श्रहेरिज्ह चंडियद (क्रुमानि मानुषानि भहीरहरू जन्तिः प्रतितः शुप्राण नटक् किन्ध जनीति प्रानुषाति चेतीरतत्र निमिन्ध ক্রিণ অতএব যেমন জনীয় তৈজন ও বায়বীয় শরীরে পার্থিবাণ

শের সম্বন পুষ্ঠ উপভোগ কংগ্যোগ্ডা আছে এবং জনানির পুখোন।পুষ্क जनीयवाबितव।वहात इहेरछह र जीमन मानुसः बित পাर्बिद नहीरद्व समोत्र जागामित नम्न भूयुक्त रक्षमामि औरह अव॰ পৃথিৱীর পুখোর। পুযুক্ত পার্থিবত্তের ব্যবহার হইতেছে। এবং পুমাণাভাব পুযুক্ত শত্রীরত্ব জাতি নহে কিছু চেন্টার আশুরত্ব ! किकी मृत्यु भावीविक किया विषय खड्बर वृक्कामि भावीदि অব্যাপ্তির আশঙ্কা করিবানঃ যে হেত্ত লক্ষাবতী পুভ্তির আকু-ঞ্ন আমু কদ্যাদির পুসারণ শবল মাধ্বী পুভৃতি শতার বেউন দেবদার পুভ্তিরউর্জ বংযোগানুকুব ক্রিয়া দেখিতেছি ৷ বৃক্ষাদির যে শরীর ফাছে তাছার পুদাণ তাছাতে শলীরারম্ভক বাযুর সয়ত্র তীহার পুমাণ আঁমুদি বৃক্তের ছিল্লায়গার্ইতে পুনর্বার ভাদৃশব্যক্ষর উৎপত্তি এবং অখ্যীদিব্যক্ষর শাখাক্ষেদকানন্তর পুনর্বার শাধাপলুবাদির উৎপত্তি এবি যদি ছস্তাদিতে শরীর ব্যবহার না হয় ভুরে শরীরের ৰক্ষণে অবয়ৰ ভিন্ন এই ভীগের নিবেশ করিবা ৷ এরও অনিতঃ প্থিবীর উলিয়া গুল অর্থাৎ ভু:শেন্ত্রি পার্ম্বিভয় যে হেত্রপাদির ব্যক্তকা ছউয়া গনের ব্যক্তর দুব্য হয় । যেমন কুছ্নগান্ধর ব্যক্তর তৈল ও চমুক কৃশুমাদিরপবনানীত সূক্ষ্মাথণ্ড পাথিব হয় যে হেতু রূপাদির ব্যশ্বক না হইয়া গন্ধের ব্রীঞ্জক দুব্য হয়। খ্রাণেন্দ্রিদরিকর্ষে ব্যভিচার বারণার্থ দুবঃপদ। শব্জুঃসের জানের পুতি জল কারণ অভএব নবশরাবগত গন্ধের ব্যক্তিয়ে জল তাছাতে পার্থিবস্থ না থাকিলে ও ছাতি নীই যে ছেতু তাুদৃশ জুল কেবল তাদৃশ গগের গ্রেজ নছে কিন্তু রুপেরও ব্যক্ত হয় ৷ এবং যে উপভোগের কারণ হয় छाइद्वि नाम विषय । नकन कार्याहे अनुस्थिति इय त्यं कार्या যাহার অদ্ভাষান হয় সৈ কার্য্য সাক্ষাৎ কিয়া পরস্কায় অবশ্য ভাহার উপভোগ জন্মায় ভাহার পুমান ভর্ছরি ন্পের বিশুব্ত ,দেব পুৰাদ ৰদ্ধকৰ বভাগের উপাশ্যন বিলাই ক্ষোন কাষ্ট্রের উৎপত্তি হয় না অতথ্য যাপুকাদি বুজাওপর্যার সকল পার্থির বস্তুই অনিচ্য পৃথিবীর বিষয় হয়। যদ্যাপি পরীরা-দিরও বিষয়ত্ব আছে তথাপি ভিন্নং রপে কথন কেবল পিরেরর বিশৈষ জানার্থ।

জলের নিরপণ্ ক্রিতেছেন ৷

वर्षः गुक्की रसस्त्री जिले मधुर शोतले । वेषस्त्रच जवतन्तु सांसिद्धिक मुदाहतं । जिक्कादि प्रधमदत् किन्तु देशमाश्योगिजं । इतियारसर्वे सिन्धु शिमादि विषयी मतः ।

वर्गः . मूद्रा त्रत्र न्याः भी कत्त मधूत भी उत्ती। त्र्वहरू ब मृदङ्कु नार्गिष्किकमूनाङ्कः। निक्राजामि श्रुथमद् किन्नु (महम्रद्यानिकः। हिन्नु वर्गः त्रत्रनः निकर्सिमि विव्दशम्यः।

অলের শুকুবর্ণ মধুর রস ও শতিল র্ল্ছর । এবং জলে সুহ ও ৰাভাবিক দুবত্ব আছে তথাচ যে দুব্য সুহের কিয়া ৰাভাবিক দুবত্বের সমবায়িকারণ হয় তাহার নাম জল। এবং জল নিষ্ঠ যে সুহাদির সমবায়িকারণতা তাহার অবৈচ্ছেদকত্ব রূপত্ব আতির পুমাণ হয়।

পূর্পক্ষ !

জনের শুকুরপ কিরপৈ সিম্ব হয়! অসনাদির জনে নালরপাদির পুত্যক হইতেছে !

সিভান্ত ৷

্মযুনাধির অলে যে নীলরপাণির্ব পুরুত্ত হয় ভাছার ক্লারণ আপুরাধির নীলরপাণি কণডঃ অলের রূপ পুরুত্ত যে হেডু প্নেততে

नुविश्वे जान ७ करकानिए नृतुप्तार नृत्युक इरेएएहं। পূর্ণক্ষ ৷ জলের মধ্র রলে কিপুমান জলে পুডাকতঃ কোন রলের অনুভৱ হর না। নারিকেল জলাদিতে যে মধুর রবের বোর হয় त्म त्काम चानुरवृत् हर्ण चनुत्रो जहीत तमानिरक चयु तरमह ताथ रहेर्डरह चड-वर जरन चम्नु तन-छ छ हरेरड शाहत ! বিভার। হরীতকী কণ ভক্ষণানত্তর জলে মধুর রবেঁর বোধ হয় অতএব হরীতকী ফশ ভক্শ কলে মধুর রসের ব্যক্ত হয়, যেমন জল শক্রদের ব্যক্তক হয় ৷ যদি বৰ তে হ্রীভকীর ছয় রস অভএব জলেতে ছয়াওকার যে মধুর রস ভাছারই ভূম ছয় তবে জুলেল্ড কট্ডিকানিরলের ও বেখি হইতে পারে এবং আম-লকী ফল ভক্ষণানন্তরও জলে মধুর রৈলের বোধ ইইভেছে অভএব নিদ্ধান্তমূকাৰদীর হৌদুী চীকাতে আচার্যী বচন ট নভঃ-স্লহইতে সুলিভা মধুরা যে অমল জনধারা দে দীন্তি পাইডেছে এব , গৃষ্টদন্দনাদিতে যে পীত্ৰস্ত্বপি ভাছার কার্ণ ,ভাছাতে भोजन बन न नर्त बर कार्मत त्य देख हुई ठाइ। कार्न बतन व्यक्षांति नव्यक्तं व्यक्तव भी जनमर्भ रक्तन जरनेहे व्यारह ! अवः ষ্ঠাদিতে যে সুেহ আছে দেও দ্তাদির মধ্যবন্তী যে জলীয় ভাগ তাহারই সুহ অভএব সুহ কেবল জলেই আছে ৷ এবং পৃথি-ব্যাদির দুবত্ব নৈমিত্তিক হয় তৈলাদিতে যে দুবত্ব দেও তৈলাদিয় মধ্যবন্ত্রী যে জলীয় ভাগ তাহারই দুবস্ত অতএব ৰাভাবিক দুবস্তু কেবল মদেই আছে ৷ পাভাবিক দুবন্ধ পুত্ৰ ক্ষানিভ লাতি বিশেষ इत्र। अरं सामत निरुद्ध सामि भूदित नात्र संबंध द्यानं भृषि-ৰী নিডাঁ ও অনিভা এই দুই পুৰাঁর তেমন ৰল নিডা ও অনিভা এই এই পুড়ার হর ডাহার মুখ্যে পরমাণ্ছরণ অল নিড্য ষ্পুকাৰি ষরপু জুল অনিত গ নেই অনিতঃ জল তিন পুকার দেহ ইন্দুর ও বিষর বিদ্ধ পৃথিবীতে ও জলেতে এই বিশেষ হর যে पृथियोत तर योनिक ७ व्यायानिक व्यापत तर तर करन व्यायान

নিক। বেমন পৃথিবীতে পার্থিব শরীর পুনিছ তেমন বরুণ শোকে
আধীর শরীর পুনিছ আছে। এবং রসনা জলের ইন্দির হর
আর্থাৎ রসনেশির জপীয় হয় যে হেন্ত গনাদির ব্যক্তকনা হইরা
রসের ব্যক্তক দুব্য হয়। যেমন শক্তরসের ব্যক্তক জল গনাদির
ব্যক্তক না হইরা রসের ব্যক্তক দুব্য হয়। রসনেশির সমিকর্বে
ব্যক্তিচার বারণার্থ দুব্যপদ। এবং শিশিরাদি সমৃদু পর্য্যন্ত সকল
আলই অনিত্য জলের বিষয় হয়। আনি শব্রে করকাদি। করকাতে
কচিনত্ব পুগৃক্ত প্রার্থিবত্বের আশক্তা করিবা না যে হেত্ সূর্য্যকিরণাদির সংযোগে দুব্র পুযুক্ত ভাহার জনীয়ত্ব পুত্যক নিছ
ইতিছে।

ভেজের নিরপণ করিভেছেন।

सर्ध उषासे जसम्म ग्राज्य एक भासरे। वैमिनियं जनसम्म निकतादिच पूर्वेयत्। अस्तियं नगरं सिन्ध द्विमादि विघयोगमः।

শ্পর্শ উফ স্তেজসন্তু স্যাদ্রপে শুল্ল ভাষর । নৈনিত্তিক দুবত্বস্তু নিত্যতাদিচ পূর্ব ৫ । ইন্দুিয় নয়ন সিন্ধু হিমাদি বিষয়োমতঃ।

তেলের রুপ উষ্ণ হয় তথাচ যে দুব্য উষ্ণ রুপের সমবারিকারণ হয় তাহার নাম তেজঃ এবং তেজান্তি যে উষ্ণ রুপের
সমবারিকারণতা ভাহার অবচ্ছেদকত্ব তেজান্তি যে উষ্ণ রুপের
সমবারিকারণতা ভাহার অবচ্ছেদকত্ব তেজান্তি যে উষ্ণ রুপের
চন্দ্রকিরণাদিতে ও উষ্ণ রুপ আছে কিন্তু চন্দুকিরণে উষ্ণ রুপ
কানীয় রুপে আক্র রুত্বকিরণে উষ্ণ রূপ পার্থিব রুপে আক্র এবং
চন্দুত্বে উষ্ণ রুপ পুত্যক্রের অযোগ্য হয় একারণ চন্দুকিরণানিতে
উষ্ণ রুপের জান হয় না ৷ এবং তেজের রুপ পুরু ভাহর অর্থাৎ
ছাত্তিবিশিট পুরু হয় ৷ পৃথিব্যাদির পুরু রুপ গান্তি রুহিত হয়

ভাষার পুরাণ কাঁচন্যাদি। বহিছে সুবর্ণানিতে ও মরকভ্যাণিপুভৃতিতে দেরপ পার্থির রপে আক্ষ্ম আহে একারণ তাহার পুত্রক্ষ হক্ষ না কিছ চক্ষ্মকিগানিতে আক্ষানকের অভাব পুতুক্ত পুত্রক্ষ হক্ষতেছে। এবং ভেরের দূরত্ব নৈমিত্তিক মুব্যুত্বর পুত্রক্ষ হতেছে। যাব্যাদিতে ক্ষরার বছরে নৈমিত্তিক মুব্যুত্বর পুত্রক্ষ হতেছে। যাব্যাপি আন্যানিতে ক্ষরার বছরে নৈমিত্তিক মুব্যু নাই তথাপি নৈমিত্তিক মুব্যু বিশিক্ষেবর্ত্তানা প্রিবীত্ব ভিষা যে মুব্যুত্ব ব্যাপ্য জাতি ভাষ্প জাতি বর্ষণ পর্যায় বছনে আহে।

श्वर्णका न्यनीवित रेज्यनरकृ किनुप्रान । निकासी न्यनीवि তৈজসু হয় যে হেন্ত দুবতু নাশের পুত্তিবনুকের অভাবে অত্যন্ত বহি न रहारत ७ नूदर्शमित मुदजु नाम इस ना १ श्विदीत ७ जरमत দুবত্ব কিন্তু অঘি সংযোগ নাশ্য হয়। এবং জলের ন্যায় তেজঃ পদার্থ নিত্য ও অনিত্য এই দুই পুরুরে হয় তাহার মধ্যে পর-মাণু, ৰরণ তেজঃ নিডঃ ছঃপুকাদি ৰরণ তেজঃ অনিচ্ছা সেই অনিত্য তেজঃ জিন পুকার হয় দেহ ইন্দ্রিয় ও বিষয় ৷ এবং যেমন জনীয় অধ্বেনিজ দেহ বরগুলোকে পুসিত্ব ভেমন তৈজন আয়ে-নির দেহ সুর্য্যাদি লোকে পুসিত্ত আছে। এবং নয়ন তে**জের** ইন্দুয় হয় অর্থাৎ নয়নেন্দুয় তৈজন হয় যে হেন্ত পরকীয় স্বর্শাদির ব্যঞ্জক না হইয়া পরকীয় রূপের ব্যঞ্জক দুব্য হয়। যেমন भूमीश शतकोत्र अर्भानित वाश्वक ना रहेशा शतकोत्र अरशत वाश्वक মুব্য হয়। পুনীপে ৰক্ষর রূপের ব্যক্তর পুযুক্ত দৃষ্টান্তানিছি হয় তাহার বারণার্থ পুরুষ পরকীয় পদ। ঘকার রূপের ব্যক্ত পার্ধির ঘটাবিতৈ ব্যক্তিচার বারণার্ধ দিতীয় পরকীয় পদ ! নয়নে-म्बिक निवस्थं वर्राष्ठवात बात्रभार्श्व मुबर **नव। अवः नै्व**र्भाव बिल् পর্যন্ত সকল,তেজই অনিউঠতেজের বিষয় হয় ৷

ৰায়ুর নিরপণ করিতেছেন।

क्षपाकोश्नुकाश्चीतः सथैकु प्रवनेमतः। तिर्व्यक्षमनवानेष चेयः सर्थाद सिन्नकः। पूर्ववित्रव्यतांषुक्तं देश्वयापि समिनियं। प्राचादिकु मशावायुग्यंनो विवयोमतः।

व्यश्वार्यम्बेशनीः न्यमंत्र्वत्यकः। जिर्गुग्गमनवात्मय (क्षयः न्यमापि निक्कः। शूर्वविष्ठुगुजामुग्कः (पहत्राति वृतिनित्यः। श्रानिष्ठु महावायुगर्गुरहा (ववरयामजः।

বায়ুর, রুর্ণ অপাকল অনুফালীত হয় ৷ পৃথিবীর রুর্ণটেউতে বিশেষ করিবার নিমিত্ত স্লর্লের অপাক্ত বিশেষণ তথাচ যে ৰুব্য অপাক্ত অনুস্থাপীত রূপের সমবায়িকারণ হয় তাহার নাম বায়ু এর° বায়ুবৃদ্ধি যে অপাড়ের অনুষ্ঠাশীত রূপের সমবায়িকার-ণতা তাহার অরক্ষেক্ত বায়ৃত্বভাতির পুমাণহয় ! বায়ুর দুব;ভের भुभाग ज्ञानबहरा अर्गद बानुहरू । यर वह अनीनुहरू त नुवारह रयमन शृधिवताति । वाज् मुद्रा शनार्थ एक राय रहत झर्च बहुश छानत আপুর হয় যেমন ল্লেপ্ডণাপুর বহি ৷ এবং বারুর গমন বক্ত হয় ৷ এবং অপাকত অনুষ্ঠালীতল্প ও পাথাপলুবাদির কয়ন হেন্তক বায়ুর অনুমান হয় ৷ এবং তেজের ন্যায় বায়ু নিভ্যপ্ত অনিভ্য এই শুই পুকার হয় তাহার মধ্যে প্রমাণু বরণ বারু নিডঃ বঃশ্কাবি সুরুপ বায়ু অনিত্যা সেই অনিত্য বায়ু 'তিন পুকার দের ইন্দ্রির ও বিষয় ৷ এব॰ যেমন ডৈজস, অযোনিক দেহ সূর্য্যাদি লোকে পুনিছ তেমন বায়বীয় অযোনিজ দেহ বায়ুলোকে পুনিছ আছে? এবং পিশাচাদির অযোনিক পদীর ও বায়বীয় জানিবা। এবং ভূগিন্তিয় শরীরব্যাপি হয় তথাচ ভূগিন্তিয় সংশ্র ব্যক্ত অর্থাৎ বায়বীয় হয় যে হেতুরুপাদির ব্যক্তক না হইরা লুপের: ৰ্যঞ্জ সুৰ্যু হয়। যেনন শরীর সম্বুদ্ধি সলিলের শৈভ্যুঞ্জক

ব্যক্তনবায়ু রুণাছিত্র ব্যক্তকা হইরা স্থাপর ব্যক্তক পুব্য হয় ই আগিনুর সন্নিক্ষে ব্যক্তিচার বারণার্থ পুব্য পদাই এবং পুরুণ আছি মহাবায়ু পর্যন্ত সকল বারুই অনিভঃ বারুর বিবর হয়।

আ্তাপের নিরুপণ করিতেছেন !

আৰাছয়নু বিষয়: ছন্টা বীয়ক্ষিন্যন। আকাশস্ত্ৰ বিজ্ঞেয়: শয়ে বৈশেবিকোওণ:।

শবু আকাশের বৈশেষিক গুণ হয়। আকাশ এক হয় অভএব তদুটবাদির ন্যায় জাতি নহে কিছু শব্দের আশুয়তু। বে দুব্য শব্দের আশুয় হয় তাহার নাম আকাশ। আকাশে বিশেষ গুণান্তরের ব্যবচ্ছেদের নিমিছ গুণেতে বৈশেষিক বিশেষণ। আকাশের দুব্য-ব্যের পুমাণ শব্ধ সুরপ গুণের আশুয়ত্ব এবং মিত্যক্তের পুমাণ মুশ্দ প্রাগভাবের অপুতিযোগিত্ব। আকাশের শরীর ও বিষয় অনম্ভব হয় একারণ কেবল ই শিয়া দর্শন করাইতেছেন।

> ब्राज्यमुं भवेत् श्रीषं, 'देन्प्रियुषु स्ट्राट्ट (भ्राजः,

পুরণ আকাশের ইপ্রিয় অর্থাৎ পুরণেপ্রির আকাশ হয় ছে। ছেন্ত পরের অপ্রিয়। যেকে যে পরের আপুর হয় ন। বে আকাশ হয় না। আকাশ বাঘবতঃ এক হয় পুরণ কিন্ত বাকি। ভেদে ভিয়ং অতএর পুরণ কি রূপে আকাশ হইতে পারে এই। হেন্ত কহিতেহেন।

रकः सम्बद्धपाधितः,

একঃ সমহপূর্ণাধিতঃ,

যাবঃপি আকৃষ্ণ এক হয় তথাপি কর্ণশক্ষুণী পুত্তি উপাধির ভেবে তিলং হয়।

काःमह निक्रमन केंद्रिएए हम ।

नकार्ता नक्कः वाक्षा नमवामाववी मतः। पराक्ष्यरत्ववीचेतुः,

জন্যানা॰ জনকঃ কালো জগতামাশুয়ো মৃতঃ। পরাহপরভূত্মহেতুঃ,

कान जन।वहघात्वत्र जनक एतः। कान निर्श्व जन। वहत्र অনকত্ব সেই কালের নিড্যত্ত্বের প্রমাণ হয়। এবংকাল জগতের बानुग्र रत्र उद्यान रेनानी॰ यो बाह्र उनानी॰ यह बाह्र रेउनि পুর্তীতিতে যে সম্বন্ধে ঘটাদি পুকার হয় সে সমৃন্ সংযোগাদি নহে কিছ কালছ টত কালিকসুমনু অতএব সেই সমূনু ছালের পুমাণ ইয় ৷ এবি কালপারত্ব জানের ও অপারত্বজানের অসাধারণ নিমিত্ত কারণ ছয় তথাচ পরস্থাপর্য জানের অসাধারণ নিমিত্ত কারণত্ অর্থাৎ পরত্বাপরত্বের অদ্মবাদিকারণ যে দংযোগবিশেষ ভাছার আপুয়ক্তকালের পুমাণহয় ৷ কালের একবপুযুক্ত কালকু লাজি নহে কিন্ত জগতের আশুয়ন্ত। যে দুব্য কালিক বিশেষণতা সমৃদ্রে জগ-তের অ, পুর হয় তাহার নাম কাল ৷ মহাকালে কালিকসম্বত্ত ল-কৰ বন্তুই আছে এই পুতীতির অনুরোধে মহাকালে কালিকসহছে আকাশাদির ও বিদ্যমানতা সুীকার করা যায়ঃ কন্যবস্তমাতের কাল উপাধি হয় কিন্তু বিভিন্ন কালীন বস্তু ময়ের কালিক সম্বন্ধে আশার আধেরতাব অমান্য। কালের দুব্যবের পুমাণ পরাপরস্থ ৰঞ্প গুণের আশুরুত্ব। এদি কাল এক হলা তবে হল দণ্ড মুহু র্ডাছি **डिंग किंद्रा**ल महत इस अहे (इ.स. कहिर**े**ड्डिस 1

च्चादिः आदुपाधितः,

क्रगानिः ग्राम्भाविजः,

যদ্যশি কাল এক হয় তথাপি উপাধি ভেদে দল দণ্ড মুহুর্ভপুহর দিন রাজি মাল বৎসর ভুত ভরিষ্যৎ ও বর্তমান ইভগ্নদি ব্যবহারের বিষয় হয়। যে কাল বর্তমান ধৃথনের পুরিযোগী হয়।
ভাহার নাম তৃত । বেমন গভাহবেল। যেকাল বর্তমান পাগুড়াবের
পুতিযোগা হয়, ভাহার নাম ভাবিষ্যং। যেমন আগামি দিবল।
যেকাল নিনট পাগভাবের ও ভাবিধ্বনের পুতিযোগী হয় ভাহার
নাম বর্তমান। যেমন অন্য কালের ভ্তত্ত্বভুবিষ্যভুগির ন্যার
ঘটপটাদির ও ভূতত্ব ভবিষ্যভুগি কানিবা।

দিকের নিরপণ করিতেছেন।

दूरां। निकादि धीचेतुरेका निकादिगुचते। দুরাহন্তিকাদি ধীহেতুরেকা নিত্যা দিশুচাতে।

দিকু একানিডা এবং দুরজ্জানেরও ক্লানুরজ্জানের অ্লাধারণ
নিমিত্ত কারণ হয় তথাচ দুরজাদুরজ্জানের অলাধারণ নিমিত্ত
কারণত্ব অর্থাৎ দুরজাদুরজ্বর অল্মবায়িকারণ যে সংযোগ
বিশেষ তাহার আশুরজ দিকের পুরাণ হয়। যে দুর্য দুরজাদুরজ্জানের অলাধারণ নিমিত্তকারণ হয় তাহার নাম দিক্ দুর্ভাদুরজ্ব
একত্ব পুযুক্ত দিল্ফু জার্তি নহে কিন্তু দুর্ভাদুরজ্জানের অলাধারণ
নিমিত্ত কারণত্ব অর্থাৎ দুর্ভাদুরজ্বের অলমবায়িকারণ যে সংযোগ
বিশেষ তাহার আশুরত্ব। দিকের দুর্ত্ত্বের পুরাণ দুর্ভাদুরজ্জানের
অর্প গুণের আশুরত্ব। দিকের দুর্ত্ত্বের পুরাণ দুর্ভাদুরজ্জানের
অরণ গুণের আশুরত্ব। দিক্ ও কাল ইপরহাইতে অনতিরিজ্ঞান্ত
এবং জন্যভ্রমাত্রের পুতি দিক্ কারণ অতএব সূত্রাং দিক্ নিত্র
হয়। যদি দিক্ একা হয় ভবে পুটি পুতি চি উদাচীও অবাচী ইত্যাদি
ব্যবহার ক্রিপে উপপর্য হয় এই ছেন্ত কহিতেছেন।

उपाधिमेदादेकार्थि माम्यादिवयदेशभाक्।

উপাধিভেদাদেকাহপি প্রাচ্যাদিব্যপদেশভাক্।

যদ্যলি দিক একা হয় তথালি উপ।ধি:ভদে পূর্বা পশ্চিমা উত্তরা ও দক্ষিণা ইত্যাদি ব্যৱহারের বিষয় হয়। যে দিক্ যে কালেয়ে পুরুষের উদ্ধানিরির সমিহিতা হয় সে দিক্ সে কালে সে পুরুষের चाले द्रियरच ६ विकासा,

আত্মেন্দ্রিয়াদ্য হ ধিষ্ঠাতা,

আয়া চল্রাদি, ইল্রিয় গণের ও শরীরের অর্থিতা অর্থাৎ কর্তা হয়েন। যে দুব্র সুথদুংধাদির সমবায়িকারণ হয় তাহার নাম আয়া । আয়ার দুব্রখের পুমাণ সুথদুংধাদি য়রপ গুণের আশুয়রু। আয়ার লাতি ইয় য়ে হেল আয়ানিষ্ঠ য়ে স্থাদৃংধাদির সমবায়িকরিণত্ব তাহার অর্থান্ড্র্লিক হয়'। সেই আয়ার্ত্ত লাতি লীবের ন্যায় বুঁল্ডেতে ও আছে অতথব শাল্পে ও লোকে বুহাকে পরমায়া কহেন তবে যে বুক্লেতে সুধদৃংধাদির উৎপত্তিনা হয় ভাহার কারণ সুধদৃংধাদির হেল্ড যে য়য়াধর্মাদি তাহার অভাব। য়ল,পিআয়া আমি সুধী আমিদুংধাইত্যাদিমানসপুত্রকের বিষয় অর্থাৎ শরীরাদি হইতে ভিন্ন হয়েন তথাপি পুথমতঃ দেহায়া-রাদি পুভ্তিকে আয়া শরীরাদি হইতে ভিন্ন এই বোধ লয়াইবার নিমিকপুমাণ দর্শন করীইতেহেন।

करखंडि संकर्टकं,

করণ-হি স্তবর্ত্ক•,

যে ছেন্ত করণসংগ্র্ক হয় অর্থাই যেমন ছেন্সক্রিয়ার করণ কুটারাদি সংস্কৃত ছেন্ডার অভাবে ছেন্সন ক্রিয়ার উৎপত্তি হয় নং ভিমনজ্ঞানের করণ ইন্মির সংস্কৃত জ্ঞান্ডার অভাবে জ্ঞানের উৎপত্তি হয় না। অতথ্য কুটারাদি হরণ করনের কর্তার নগার চজ্রাদি ইদিরু হরণ করনের ও এক আত্রিক্ত কর্তা অবশ্য কর্ত্বার হয়েন
ভথাত চক্রাদি ইন্দিয়ের কর্ত্বরূপে শরীরাদিহইতে ভ্রিএক আঁছা।
বিভ হইলেন। চজ্রাদি ইন্দিয়ের শরীরাদিহইতে ভিন্ন এক কর্তার
কর্মনে কি পুয়োজন শরীরকেই কর্তাবলি এই/ভূম দূর ক্রিতেহেন

ছহাহয় ৰ বিন্ধু মনিদু যদিবাহন:। শরীরস্য ন চৈতন্য- মৃত্তেমু ব্যভিচারতঃ।

শরীর চৈতন্যরহিত হয় যে হেও মৃতশরীরে চৈতন্যভাবপুরুক ব্যভিচার হয় তথাচ কর্ত্ত্বর পুতি জানকারণ অতএব শরীরের জানভাব পুযুক্ত কর্ত্ত্ব সম্ভব হয় না।

পুর্পক। যেমন আমারদিগোর মতে মৃত্পরীরে জানাভাব পুযুক্ত ব্যক্তিচার হয় তেমন মোলার কর্ত্বাদী যে তোমরা তোদারদিগের মতে ও মুক আস্থাতে জানাভাব পুযুক্ত ব্রুভিচার হয় অতথ্য তোমারদিগের মতে মুক্ত আন্মাতে পুলাভাব পুযুক্ত জানাভাবের ন্ত্রি আমারদিনার মতে ও মৃতপরীরে পুলাভাব পুযুক্ত জান।ভাবে কি ক্ষতি। বিদ্যান্ত। যদি পরীরের চৈতন্য থাকে তবে বালক কালে দৃষ্টবস্তুর যৌবনকালে সুরুণ ছইতে পারে না যে ছেত্ত অবয়বের ছানবৃদ্ধি পুযুক্ত পরীরের পুনংং উৎপত্তি বিনাপাহয় একারণ বীশ্য পরীরহাইতে যৌবন পরীর ভিন্ন হয় यमि वन किन्न भेशौरत ब्युबादन इत्र उटव भन्नी दिवत देवकन हवानी त्य ভোমরা ভোমারদিণের মতে এক জনের দৃষ্ট বস্তুর ঋরণ অন্য জনের কেন নহিয়া ৩ বৰ যদি পরীর সচেতন হয় তবে সদ্যোজাত নান্তকর স্তনপানাদিতে পুত্তি হাইতে পারে না যে হৈছ ভাদৃশ পুৰ্বির পুতি ভূৰণান আলার সুখের সাধন এই রূপ ইন্ট সাধনতা লান কারণ হয় ভাগুণ আদকের কিছু সে কালে এ পুকার ইউ দাৰনতা জান হইতে পাহে না৷ আত্মার চৈতন্যোদী যে আমরা

আলার দিনের মতে কিছু এরপ দোব হর না যে হেন্ড বাল্য যৌবন পরীরের প্রত্য না থাকিলে ও আন্থার প্রত্য আহে এবং পুতি
বন্ধে পরীর ভিন্ন হইলেও আন্থার প্রত্য পুরুত্ব পূর্ব কথে অনুভূত যে ত্বনগানে ইন্ট সাধনত্ব তাহার সেই কালে মরণ হয় পশ্চাৎ
বালকের ত্বনগানে পুরুত্তি হয়! অতএব অর্ভ পুসূত বানরবৎলাদির ও পাথাদি গুহুণ দেখিতেছি! এতাবতা আন্থার নিত্যত্তও
সিদ্ধ হইল যে হেন্ড স্টির অনাদির পুযুক্ত আন্থা ও অনাদে
হয়েন! অনাদি যে ভাব পদার্থ তাহার নাশ হয় না। অনাদি যে
পুগোভাব তাহার নাশদর্শন পুযুক্ত ভাবপর্যান্ত কথন। চক্লুানি
ইন্দির জানাদির করেণ ও কর্তা হয় এই আশস্কার নিবারণ ফরিতেহেন!

तथा नहीं दिन्द्रियाबामुमधाते बर्च सृतिः। তথা पृष्कि मिनुशागा सूर्णशास्त्र कथ् सृतिः।

যদিচ ক্রাদি ই প্রিয় সচেতন ইয় তবে পুরে যে বস্তু যে ই পিরের গোচর ইইরাছে পশ্চাৎ বৈবাৎ সেই পিরের নাশ ইইলে সে বস্তুর অরণ ইইতে পারে না ফে ছেন্ত সে বস্তুর পূর্বার ভাবক ই পিরের অভাব আছে! একের অনুভূত বস্তুর অরণ অন্যের ইইতে পারে না যে ছেন্ত অনুভব ও অরণের সামানাধিকরণে কার্য্য কারণ ভাব অর্থাৎ পূর্বে যে বস্তু যৎকর্তৃক অনুভূত হয় পশ্চাৎ সেইবস্তু তৎ কর্তৃক আত হয় এইরপ কার্য্য কারণ ভাব! এতাবতা চক্ষ্রাদি ই পিনের ও চৈতন গাতাব পুরুক কর্তৃত্বাভাব সিদ্ধ ইইল ! অনিত্য চক্ষ্রাদি ই পিরের বর্তৃত্ব না খাকুক্ কিছু নিত্য মনোরপ অন্তরি পিরের কর্তৃত্ব আশক্ষা নিবারণ করিবার নিমিন্ত কহিতেছেন!

मने। प्रिम न तथा चानायानथ्यक्तं तदा भवेत्।

ননেহিপি ন তথা জ্ঞানাদ্য হ্বপ্ত ক্ষান তথা তবে ।

মনের ও চৈতন্য নাই যদি মনের চৈতন্য থাকে তবে জ্ঞানাদ্রির
পুত্যক্ষ হাতে পারেনা যে হেজমন প্রমাণু বরুপ হর্ম ক্তএব মনে-

তে পুত্তকের কারণ যে মহত্বভাহার অভাব পুযুক্ত মনের অভীপুরত্ব হেরক মন্ত্ব জানাধি ও অভীন্দ্রির হয় যেমন্-পুত্তকের
কারণ উভ্তরপের অভাব পুযুক্ত শিশাচানির অভীন্দুরত্ব হৈছক
বিশাদান ব্রিপদার্থ ও অভীন্দুর হয় ! এতাবতা মনের ও চৈতন্যাভাবে পুযুক্ত কর্ত্বাভাব নিছে হইল ! এই নমুন্দুরু বাক্যের
তাৎপর্যার্থ এই যে কীবাঝা শরীরাদি হইতে ভিন্ন চৈতন্য বিশিকৈ ও ইন্দুরাদির কর্তা! যদি আখা অভীন্দুর হয়েন ভবে মনের
ন্যায় আখা ব্রি জানাদি ও অভীন্দুর হয় অভএব আন্দার পুত্তক
বিষয়ত্ব সংস্থাপন করিতেহেন!

भर्मात्वमी स्वीत्ध्यत्ती विशेषगुरुवागतः। श्रमारुथमानुरशारुश्राका विस्मत्रवनर्यागर्जः।

জ্ঞানাদ সুরুপ বিশেষ গুনের সম্বন্ধ হাত্তক মর্মাও আমর্মের আপুর যে আত্মা তেঁহ পুত্রক ক্রিয় হয়েন অর্ধাৎ আত্মারু পুত্র-क्रित शुक्ति वित्यव गुर्गद नष्टन् कार्तन हारा वित्यव ग्रे.न्त हरून् दु छि-রকে আত্মার পুত্রক ইর না যে হেন্ত আমি জাতা আমি কর্তা আমি সুখী আমি দুশ্ধী ইত্যাদি পুকার পুতীতিই হয় কিছ কেবল আমি এ পুকার প্তীতি হর না ! যদি শরীর ধর্মাধর্মের আশুয় হয় তবে অতি স্তি পুমাধু নিছ যে শরীরান্তরে কৃত কর্মের শরীরান্তরে ফল ভোগ ভাছা অসম্ভৱ হয় যে হেন্ত পরীর সুরূপ আগুয়ের নাপে ধর্মাধর্ম বরুপ আশ্বিতের নাশ হয় । এবং যদি পরমানা ধর্ম ধর্মের আশুয় হয়েন তবে তাঁহীতে ও জন ু দুধ দুধোদিয়ে উৎপত্তি হ'ই তে পারে কিছু জীবালা ধর্মাধর্মের জ্বাপুর হইলে এ দোর হয় না যে হেন্ত জীনের নিত্যত্ব পুযুক্ত পরীরান্তরে ও ধর্মাধর্মের নাপ হর না। অভিস্থিত বস্তুর দাক্তাদাতে সুখ দুঃখের উৎপত্তি रचक कीवाकात करें। मूंथ-पृथ्य विद्याधालाव । मुकीत दुनर्द আন্তাতে পুত্তক পুমাৰ দৰ্শন করাইছা পরকায় দেহৈ অনুমান मुधान वर्णन कहा है (छ: इन !

मनृत्वाचा नुमेवेत्य, शुक्रामारुनूरम्राग्रारुग्नः,

পরকার দেছে পূবৃত্তি আদি হৈত্তক এই আত্মার অনুমান হয়
শারীরে যাত্রাদির অভাব পুযুক্ত এহানে পূবৃত্তি শাব্ধে চেক্টা 1 কাগ্লিক বলপার বিশেষের নাম চেক্টা তথাচ চেক্টা কোন ব্যক্তির
যাত্র সাগ্রাহয় অতএব চেক্টা হেত্তক যত্র বিশিক্ত আত্মার অনুমান
হয় এইভাব 1 দ্টাত্তদর্শন করাইতেহেন,

হয মন্ত্রৰ দাহছি:, পুরু গত্যেব সার্থিঃ

গেমন রথের গমন হেন্তক দারথির অনুমান হয়। যদ্যপি রথের কর্মা টেকটা হয় না তথাপি যেমন গমন স্কুপ কর্মাহেত্ক রথে সারথির অনুমান হয় তেম্ন চেন্টাস্কুপ কর্মাহেত্ক পরকীয় দেহে যতু বিশ্রেক আর্মান হয়। তথাচ এ হানে চেন্টা হেন্ত নহে কিন্তু কর্মা সেই কর্মা দ্রীন্ত হলে গমন সূক্ষপ এবং দার্টান্ত হলে চেন্টা স্কুপ হয় আভএব দ্রীন্তাসিদ্ধি দোষ হয় না এই ভাব। এই দ্নীন্তের দারা পরীরের রথ স্কুপত্ব এবং আর্মার সারথি বর্গান্ত্র প্রতিপল্ল করিয়াছেন।

खन्दहार्यात्रवेष्ठयं मनीमात्रयविद्यः।

অহকারস্যাশুয়ে। হয় হনোমাত্রস্য গোচর: 1

এই আয়া অহক।রের আপুর অর্থাৎ, অহণ এই পুরার পুরীতির বিষয় হয়েন। শরীর অইক।রের আশুর হয় না যে হেন্ত
পূর শরীরের নাশ হইলেও সেই আমি এই পুরার অন্তব
হইতেছে। এবং এই আয়া মনোমাবের গোচর অর্থাৎ চক্ষুরালি
বহিটিন্মির জন্য পুত্যক্ষের বিষয় হয়েন লা কিন্তু মানস পুত্যক্ষের
বিষয় হয়েন যে হেন্ত বহিরিন্মির জন্য পুত্যক্ষে রপানি কারণ

হয়। আঝার যে পূর্বোক্ত বিভূত্ব ও বুছ্যাদি চর্গাশ ওণাশরত ভাহা রুট করিবার নিমিক কহিতেছেন।

> विमुर्चेद्यादि गुरुवान् विजर्वेद्धाः हि स्थावा

বিভূব্দ্যাদি গুণবানু,
এই আয়া বিভূ এবং প্রোক ব্দ্যাদি চক্তদশ গুণের আশুরু
হয়েন।

সমূতি পুণক সকতি ক্রমে বৃদ্ধি কত পুকার হয়, তাহা দর্শন করাইতেহেন।

वुडिल् दिविधा, मता,

सन्भूतिः सृतिसमादः दुभूतिसतुर्विधाः । प्रयस्माद्यान्तिति स्तरोग्रामिति शास्त्री ।

বুজিন্তু, নিবিধা মতা, অনুভ্তি, ষ্তিশ্চন্তাদহনুভূতিশ্তুরিধা। পুত্যক্ষমহপ্যহনুমিতি স্তথোপমিতি শান্তে।

বৃদ্ধি দুই পুকার হয় অনুভব ও শারণ। সেই অনুভব চারি
পুকার পুডাক্ষ অনুমিতি উপমিতিও শারু। এই পুডাকাদি অনুভব
চত্তকৈরে করণ যে পুডাক্ষ অনুমান উপমান ও শাবু তাহার নাম
পুমাণ। চক্ষরাদি ইন্দিয় করণক যে অনুভব তাহার নাম পুডাক্ষ।
সেই পুডাক্ষের করণ যে চক্ষ্যাদি ইন্দিয় তাহার নাম পুডাক্ষ।
সেই পুডাকের করণ যে তাহার নাম অনুমিতি।
সেই অনুমিতির করণ যে ব্যান্তি জ্ঞান তাহার নাম অনুমান পুমাণ।
সাদ্শ্য জ্ঞান করণক যে অনুভব তাহার নাম উপমিতি। সেই উগুমিতির করণ যে সাদ্শ্য জ্ঞান তাহার নাম উপমিতি। সেই উগুমিতির করণ যে সাদ্শ্য জ্ঞান তাহার নাম উপমান পুমাণ।
সান করণক যে অনুভব তাহার নাম শারু। সেই শারের করণ যে

পদ আৰু ভাছার নাম পরু পমাণ ! করণ ও ব্যাপ্তির সঞ্চণ পশ্চাৎ কহিবেন 1

পুঠ্যক কৃত পুকার হয় ভাছা কহিতেছেন। पासजादि प्रभेदेन प्रवादां विविधं मतं। ঘ্রাণনাদি প্রভাদন প্রত্যক্ষণ বহিষণ মত।।

तिरे गुडाक चानक चानि नामराख्या हम शुकात रहा। चौनक রাসন পারণ চাক্ত্র জাচ ও মানস ৷ নাসিকা জন্য পুত্রক্তের নাম মুাৰক ৷ কিছা অন্য পুত্যক্ষের নাম রাসন ৷ কর্ণ জন্য পুত্যক্ষের নাম শাবণ। চক্ষুক্র। পুত্তকের নাম চাক্ষা। চর্ম জন্য পুত্তকের নীম হু।চ । মনো জন্য পুডঃক্লের নাম মান্দ । কোন্পদার্থ,কোন্ हेन्द्रियं विश्व इयं ठाहा कृहिएएहन ! श्वासमा गीचरीम्नी मन्तरिर्दिम स्मृतः।

तथा रसे।रसन्नावास्त्रया सन्देशीयच अतेः।

ত্মাণন্ধ গোচরোগন্ধে। গন্ধন্তাদির্হপি মৃতঃ। তথা রসোরসজ্ঞায়াত্তথা শব্দেহণিচ শ্রুণতে: ।

शंक ও शंक्षवीनि मुल्लिक ग्राम्) स्या व्यानि भरत् मूर्राच्य अ অসুরভিত্যাদি। রস ও রসভাৃদি রসনার গ্রাহ্র হয়। আদি পরে মধ্রতাদি । শব্ধ ও শবুতাদি শুবণের গু।ছঃ হয় । আদি শব্ধে বর্ণস্থ ও ধুনিত্রাদি। গভাদির পুত্যক্ষে গভবৃত্তি গভত্তাদির ও পুত্যক হয় গছাদির আশুয়ের পুত্রক হয় না যে হেত তাহাতে গুলাদির বছৰ খাকে না কিন্ত আপদির গুঁছে গ্রন্থায় হেন্তক গ্রন্থাদির আপু-রের অনুমান হয়।

उद्गतस्यं नवनस्य गोचरी मचाबि तदन्ति एचक्कसंके । विभाग संधामपराश्यरत चेच् अवतं यरिमाख्युत्रं। िक्रिया जाति बेरकदिनं समवायय तरियां। सङ्गति चतुः संयोगादावीचाङ्ग्रक्यवीः।

উজ্তৰপ-নয়নস্পোচরোদুব্যাণিতছিপ্থজ্স-থ্য বিভাগ স-যোগপরাহপরত্ব সেহ দুবত্-পরিমাণযুক্ত। কিয়া- জাতি- যোগ্যবৃত্তি- সমবায়ঞ্ তাদৃশ্ব। গৃহাতি চকু: স-যোগাদালোকোজ্তুৰপয়োঃ।

উভূত রপ রুণত্বাদির সহিত চঞ্গুছিঃ হয় ৷ উভূত শব্দের ভাৎ-পর্য্যার পুড 🖚 যোগ্য। পূর্ব্বোক্ত গন্যাদি ও উভূত জানিবা যে হেস্ত পাবাণাদির গুনাদি খাণাদির গ্রাহ্যহুরনা। এবং উভূত্ব রূপ বিশিষ্ট ৰুব্য পুত্যক্ষ যোগ্য ৰ্যক্তিৰ্দ্ধি পৃথক্ত্ব সন্ধ্যা বিভাগ সংযোগ পরত্ব অপরত্ব দুেহ দুবত্ব পরিমাণ ক্রিয়া জাতি ও সমবার ইহারা দুব্যত্তা-নির বহিত আলোক ওউভূত রপের সহঁকে চন্দুর্গুছের হয়, ওখাচ চাক্ষ পুত্যক্ষর পুতি আলোক সংযোগ ও উচ্ত রপ কারণ হয় ভাছার মধ্যে উভূত রূপের লৌকিক চীক্ষ্ পুড্যক্ষের পুডি কেবল আলোক সংযোগ ৰাশুয় সমবায় নম্বন্ধে কারণ এবং দুবেরে সৌকিক চাকুর পুড/ক্ষের পুর্তি-আলোক সংযোগ ও উর্কুরন সীমবার नवत्त्र कात्रन रूपां अवन्तुरवर नप्रत्यन त्यं नृथक्षृत्रन्थत । विकाशा-দি তাহারদিগের নৌকিক চাঁক্র পুত্রক্ষেরপুতি আলেকি নংযোগ ও উভ্তরণ ৰাশুয় সমবায় বরণ পর্মুরা সহত্তে কারণ হয় ৷ এবং ৰুবেঃ সমবেত যে কুণাৰি ভাহাতে সমবেত যে ক্লপন্থানি ভাহাক্লি-গের দৌকিক চাক্ষ্য পুত্যক্ষের পুতি আলোক সংযোগ ও উভ্তরপ ৰাপুর সমবেত সমবান্ত সুত্রপ পরমুরা সমূছে করে। হয়। এ হারে সমবায় শবু উপলক্ষণ ম্বাত্র জ্ঞাচণদুব্য বৃত্তি সমবায় ও অভাবের লৌকিক চান্ত্র পুত ক্লের পুতি আঁলোক সংযোগ ও উচ্চ ক্ল বার্ণুর বিশেষণতাবৃত্তপ পরমূরা বমুছে কারণ হয়। এই রীতিজ-म नुद्रा नम्रद्रक द्वलाहि वृद्धि नमवाम ও অভাবের পুত্রকে কার্য্য কারণ ভাব আনিবা। প্রীয় উন্ন ও লিখাচারির উদ্ভ রপভািষ পুর্ক চাছ্য প্তাক হয় না ৷

उद्ग्रस्थवद्वं गोचरः साध्यय तयः। रूपाँ व्यवज्ञवियोग्धं रूपमध्याऽपिकारमं। द्रयाऽयसे तेचीथोगी मनसा जानकारमं।

উজ্তশশ্বদূব্য গোচর: সোহপিচ স্বচঃ । কপাহন্যচচক্ষুবোযোগ্য কপমত্রাহপি কারণ । দুব্যাহধ্যকে স্টোযোগো মূনসা জ্ঞানকারণ ।

উন্তুত ল্লপ্ৰিশিষ্ট দূৰঃওউন্তুত ল্লপ্ৰ দুৰ,জাদির সহিত স্বচের গ্রাহ্য হয়।লিশাচাদির রূপে উভ্তত্তীভাব পুযুক্ত এবং পিশাচাদিতে উভ্ত ক্রবাভাব পুমুক্ত ক্লাছার ডাচ পুড হুছ হয় না। এবংরপ ভিন্ন ওরপ-ত্বানি ভিন্ন চক্ষ্মীহ্য যে২ বস্তু ভাহার৷ ত্রাণিদুয়ের ও গ্রাহ্য হয় অভৰৱ পৃথক্ত রুপোর ও বিভাগাদি যেং চক্ষুর্নাছ্য গুণ এবং ক্রিয়া ও ভাতি তাহারা ও অণিন্দ্রিয়ের গ্রাহ্য হয়। এবং দুবেরর অণিন্দুর बन्द्र भुक्त इस अवश् कावन वर्षा ६ मुद्र वह व दिवि मुद्र बन्द्र भूक एक রূপ আর্ণ "হ্য়। এ স্থানে নব্য নৈয়ায়িকের দিগোর এই মত। ৰহিরিন্দিয় জন্ত দুব্য পুত্যকে পুমাণাভাব লুযুক্ত রপ কারণ নহে কিন্তুনুরে চাকুষ পুত্যকে রূপ কারণ এবং স্থাচপুত্যক উদ্ত রুর্ণ কারণ যে ছেন্ত রূপ ও ক্লর্খের বিদ্যমানতা ও অবিদ্য-মানতাতে দুবেরে চাক্ষ ও তাচ পুতরকের উৎপত্তি ও অনুৎ-পরি দেখিতেছি ৷ অতএব বায়ু আদির রুপাভাব পুযুক্ত চাক্ষ পুড;ক এবং আকাশাদির স্থাভাব পুষ্ক ুড়াচ পুত হয় না কিন্তু বায়ুর আফ পুত ক্ষ্য যে ছেত্বায়ুকে স্প कतिराजीहा अरे भुजोजि शरेराजेश्हा अवः विश्विष्मुत्र अवः मुवः পুড)ক্ষের পুডি আয়াতে ও আকাশে অবৃদ্ধি যে বিশেষ গুণ সেই কারণ হয় অভথব কাল ও দিকের বিশেষ গুণাভাব পুষ্ক এবং আয়া ও আকাশের তাদৃশ নিশেষ গুণাভাব পুর্যুক্ত বহিরিদ্রিয় জন্য পুড্যক্ষ হয় না কিন্তু পৃথিব্যাদি জয়ের গ্লঞ্জদি স্বরূপ বিশেষ